

समर्थन और सम्मान कभी भी मांगकर नहीं, बल्कि अपने कर्मा और व्यवहार से कमाया जाता है।

● 02 गर्मियों में त्वचा की देखभाल के लिए गुलाब जल ----शहनाज हुसैन ● 06 क्या किसान मिट्टी के स्वास्थ्य या बाजार की मांग को पूरा कर रहे हैं? ● 08 रत्नगर्भा कोल्हान में आदिवासी-मूलवासियों के साथ धोखा और कब तक ?

टीओडी नीति से दिल्लीवासियों में चिंता: मेट्रो के आसपास बढ़ेगी भीड़भाड़ और जाम, आरडब्ल्यू ने जताई आपत्ति

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। केंद्र की ट्रांजिट ओरिएंटेड डेवलपमेंट (टीओडी) नीति को लेकर आरडब्ल्यू ने चिंता जताई है। उनका अनुसार, मेट्रो, रेलवे लाइन और आरआरटीएस कॉरिडोर के नजदीक सुनियोजित विकास की प्रक्रिया से भीड़भाड़ और जाम की समस्या बढ़ेगी। नई नीति के तहत मेट्रो और आरआरटीएस स्टेशनों के 500 मीटर के दायरे में सघन और मिश्रित उपयोग वाले विकास को बढ़ावा दिया जाएगा।

उससे लगभग 207 वर्ग किमी का क्षेत्र कवर होगा, जहां लोग अपने कार्य स्थल और सार्वजनिक परिवहन के करीब रह सकेंगे। आरडब्ल्यू प्रदाधिकारियों के मुताबिक पहले ही मेट्रो स्टेशनों के आसपास जाम व भीड़भाड़ की समस्या अधिक है। ऊपर से नई नीति के तहत अब व्यावसायिक तथा आवास मिश्रित उपयोग के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा।

नई नीति के तहत ग्रेटर कैलाश जैसे कई इलाकों की 30 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र इसके दायरे में आ जाएगा। इसी तरह, माडल टाउन जैसी कालोनियों में व्यावसायिक गतिविधियां बढ़ेंगी। इससे न सिर्फ जाम और भीड़भाड़ बढ़ेगा बल्कि वायु



प्रदूषण की समस्या गंभीर होगी।

आरडब्ल्यू के फेडरेशन यूनाइटेड रेजिडेंट्स ऑफ दिल्ली (यूआरडी) के महासचिव सौरभ गंधी के अनुसार, यह नीति चिंतित करने वाली है। वह भी तब जबकि, मास्टर 2021 को अभी तक पूरी तरह से लागू नहीं किया जा सका है। जिससे दिल्ली की आबाहवा को बेहतर

बनाया जाना था।

उन्होंने कहा कि माडल टाउन को ही लें। अगर मिश्रित भू उपयोग को बढ़ावा मिलता है तो उसके 500 मीटर के दायरे में न सिर्फ इमारतों का घनत्व बढ़ेगा, बल्कि जनसंख्या दबाव भी काफी अधिक हो जाएगा। उससे वायु प्रदूषण में वृद्धि होगी।

आरडब्ल्यू के एक अन्य फेडरेशन ऊर्जा के अध्यक्ष अतुल गोयल के अनुसार, यह नीति इसलिए भी सही नहीं कही जा सकती है क्योंकि जल्द ही मास्टर प्लान 2041 आने न सिर्फ इमारतों का घनत्व बढ़ेगा, बल्कि जनसंख्या दबाव भी काफी अधिक हो जाएगा। उससे वायु प्रदूषण में वृद्धि होगी।

माननीय प्रधानमंत्री जी....

परिवहन विशेष न्यूज

माननीय प्रधानमंत्री जी, सादर प्रणाम।

मैं देश के उन हजारों-लाखों परिवहन व्यवसायियों की ओर से आपको यह पत्र लिख रहा हूँ, जिनकी आजीविका सड़कों पर दौड़ते भारी वाहनों—ट्रकों, ट्रेलरों और अन्य व्यावसायिक गाड़ियों—से जुड़ी हुई है। यह केवल मशीनों का विषय नहीं है, यह उन परिवारों की जीवनरेखा का प्रश्न है, जिनके चूल्हे इन्हीं पहियों की गति से जलते हैं।

मान्यवर, एक ओर हम देखते हैं कि देश में अनेक ऐसी फैक्ट्रियाँ—चाहे वे केमिकल उद्योग हों, स्पंज आयरन प्लांट हों या अन्य भारी उद्योग—लगातार वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। कई बार उनके प्रदूषण-रोधी यंत्र निष्क्रिय हो जाते हैं, चिमनियाँ विषैले धुएँ उगलती हैं, मिट्टी और हवा दोनों दूषित हो जाते हैं, फिर भी वे उद्योग बंद नहीं किए जाते। उन्हें सुधार का अवसर दिया जाता है, उन्हें चलने दिया जाता है।

किन्तु दूसरी ओर, एक वाहन—जो केवल कचरा-पुर्जा का संयोजन है—जिसका हर भाग बदला जा सकता है, जिसे समय-समय पर दुरुस्त कर पुनः स्वस्थ बनाया जा सकता है, उसे केवल 15 वर्ष की आयु के बाद “अयोग्य” घोषित कर दिया जाता है। वह वाहन, जिसके निर्माण में मालिक ने अपनी जीवनभर की कमाई लगा दी, जिसके कर्ज अभी तक चुकाए नहीं जा सके, उसे अचानक सड़क से बाहर कर देने का निर्णय—क्या यह न्यायोचित है?

माननीय प्रधानमंत्री जी, यह निर्णय केवल एक मशीन को नहीं हटाता, यह एक परिवार की आशा को छीन लेता है। यह उस किसान-पुत्र का सपना तोड़ देता है जिसने ट्रक खरीदकर अपनी दुनिया बदलने की कोशिश की थी। यह उस चालक की रोज़ी छीन लेता है, जिसने वर्षों तक उसी वाहन को अपना साथी मानकर जीवन जिया।

हमारी विनम्र किन्तु दृढ़ मांग है—

1. भारी व्यावसायिक वाहनों की आयु सीमा को कम से कम 30 से 40 वर्ष तक बढ़ाया जाए, बशर्ते वे फिटनेस परीक्षण में उत्तीर्ण हों।
2. यदि सरकार स्कैप नीति लागू करती है, तो वाहन मालिकों को पर्याप्त सब्सिडी, कर में छूट और नए वाहन खरीदने हेतु वित्तीय सहायता दी जाए।
3. फिटनेस आधारित प्रणाली को प्राथमिकता दी जाए, न कि केवल आयु आधारित प्रतिबंध को।
4. छोटे और मध्यम परिवहन व्यवसायियों के लिए विशेष राहत पैकेज की घोषणा की जाए।

प्रधानमंत्री जी, यह केवल आर्थिक मुद्दा नहीं है, यह सामाजिक न्याय का प्रश्न है। जब प्रदूषण फैलाने वाले बड़े उद्योगों को सुधार का अवसर मिलता है, तो फिर एक वाहन—जिससे सुधार जा सकता है—उसे अंतिम सजा क्यों?

हम आपसे करुणा, न्याय और संतुलन की अपेक्षा रखते हैं। आपकी संवेदनशीलता और दूरदर्शिता पर हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस विषय पर पुनर्विचार कर देश के लाखों परिवहन व्यवसायियों को राहत प्रदान करेंगे।

आपके सकारात्मक निर्णय की आशा में।

भवदीय,

[राजकुमार यादव]

(परिवहन व्यवसायियों की ओर से)

Details for registration number : PMPGP/E/2026/0059118	
Name Of Complainant	RAJKUMAR YADAV
Date of Receipt	08/04/2026
Received By Ministry/Department	Prime Minister's Office
Grievance Description	माननीय प्रधानमंत्री जी, सादर प्रणाम।

मैं देश के उन हजारों-लाखों परिवहन व्यवसायियों की ओर से आपको यह पत्र लिख रहा हूँ, जिनकी आजीविका सड़कों पर दौड़ते भारी वाहनों—ट्रकों, ट्रेलरों और अन्य व्यावसायिक गाड़ियों—से जुड़ी हुई है। यह केवल मशीनों का विषय नहीं है, यह उन परिवारों की जीवनरेखा का प्रश्न है, जिनके चूल्हे इन्हीं पहियों की गति से जलते हैं।

मान्यवर, एक ओर हम देखते हैं कि देश में अनेक ऐसी फैक्ट्रियाँ—चाहे वे केमिकल उद्योग हों, स्पंज आयरन प्लांट हों या अन्य भारी उद्योग—लगातार वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। कई बार उनके प्रदूषण-रोधी यंत्र निष्क्रिय हो जाते हैं, चिमनियाँ विषैले धुएँ उगलती हैं, मिट्टी और हवा दोनों दूषित हो जाते हैं, फिर भी वे उद्योग बंद नहीं किए जाते। उन्हें सुधार का अवसर दिया जाता है, उन्हें चलने दिया जाता है।

किन्तु दूसरी ओर, एक वाहन—जो केवल कचरा-पुर्जा का संयोजन है—जिसका हर भाग बदला जा सकता है, जिसे समय-समय पर दुरुस्त कर पुनः स्वस्थ बनाया जा सकता है, उसे केवल 15 वर्ष की आयु के बाद “अयोग्य” घोषित कर दिया जाता है। वह वाहन, जिसके निर्माण में मालिक ने अपनी जीवनभर की कमाई लगा दी, जिसके कर्ज अभी तक चुकाए नहीं जा सके, उसे अचानक सड़क से बाहर कर देने का निर्णय—क्या यह न्यायोचित है?

माननीय प्रधानमंत्री जी, यह निर्णय केवल एक मशीन को नहीं हटाता, यह एक परिवार की आशा को छीन लेता है। यह उस किसान-पुत्र का सपना तोड़ देता है जिसने ट्रक खरीदकर अपनी दुनिया बदलने की कोशिश की थी। यह उस चालक की रोज़ी छीन लेता है, जिसने वर्षों तक उसी वाहन को अपना साथी मानकर जीवन जिया।

हमारी विनम्र किन्तु दृढ़ मांग है—

1. भारी व्यावसायिक वाहनों की आयु सीमा को कम से कम 30 से 40 वर्ष तक बढ़ाया जाए, बशर्ते वे फिटनेस परीक्षण में उत्तीर्ण हों।
2. यदि सरकार स्कैप नीति लागू करती है, तो वाहन मालिकों को पर्याप्त सब्सिडी, कर में छूट और नए वाहन खरीदने हेतु वित्तीय सहायता दी जाए।
3. फिटनेस आधारित प्रणाली को प्राथमिकता दी जाए, न कि केवल आयु आधारित प्रतिबंध को।
4. छोटे और मध्यम परिवहन व्यवसायियों के लिए विशेष राहत पैकेज की घोषणा की जाए।

प्रधानमंत्री जी, यह केवल आर्थिक मुद्दा नहीं है, यह सामाजिक न्याय का प्रश्न है। जब प्रदूषण फैलाने वाले बड़े उद्योगों को सुधार का अवसर मिलता है, तो फिर एक वाहन—जिससे सुधार जा सकता है—उसे अंतिम सजा क्यों?

हम आपसे करुणा, न्याय और संतुलन की अपेक्षा रखते हैं। आपकी संवेदनशीलता और दूरदर्शिता पर हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस विषय पर पुनर्विचार कर देश के लाखों परिवहन व्यवसायियों को राहत प्रदान करेंगे।

आपके सकारात्मक निर्णय की आशा में।

भवदीय,

[राजकुमार यादव]

(परिवहन व्यवसायियों की ओर से)

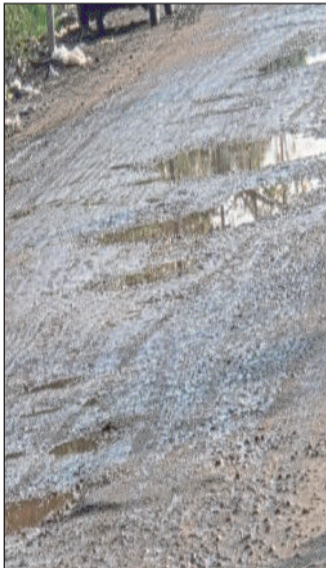
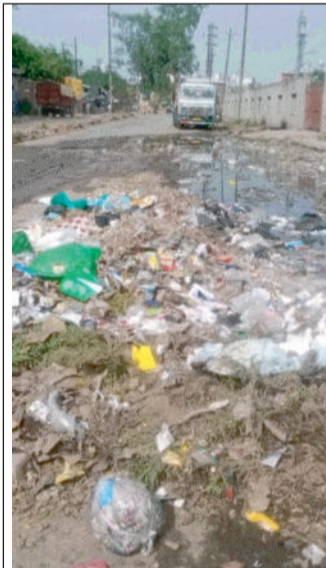
Current Status Case closed

Date of Action 09/04/2026

Remarks

It is not the government which has stopped these vehicles. But the honourable National Green Tribunal (NGT) vide its order 07.04.2015 has barred the registration and plying of more than 10 years old diesel and 15 years old petrol vehicles on the roads of NCR and Delhi. The order of the honourable NGT is still in force. The owners of such vehicles may either obtain a no objection certificate (NOC) from the registering authority to other States. Which have given their consent for assignment of new registration mark on transfer or get the vehicle scrapped. Further, it is informed that this Ministry had filed SLP with honourable Supreme Court in March, 2019 for review of the honourable NGT order but not yet listed.

ट्रांसपोर्ट नगर में पर्याप्त गंदगी का शिकायती पत्र नगर आयुक्त को भेजा



परिवहन विशेष न्यूज

बुज यातायात एवं एवं पर्यावरण जन जागरूकता समिति रजि उत्तर प्रदेश संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने नगर निगम मथुरा के नगर आयुक्त को शिकायती पत्र, पत्र में लिखा है

सेवा में, माननीय नगर आयुक्त महोदय, नगर निगम, मथुरा

विषय: ट्रांसपोर्ट नगर, मथुरा में व्याप्त गंदगी एवं स्वच्छता व्यवस्था की अत्यंत खराब स्थिति के संबंध में शिकायत महोदय, सविनय निवेदन है कि मथुरा के ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र की वर्तमान स्थिति अत्यंत दयनीय,

अस्वच्छ एवं चिंताजनक बनी हुई है। क्षेत्र में जगह-जगह कूड़े के बड़े-बड़े ढेर लगे हुए हैं, जिससे न केवल असहनीय दुर्गंध फैल रही है, बल्कि संक्रामक बीमारियों के फैलने का गंभीर खतरा भी उत्पन्न हो गया है।

देशभर में चल रहे स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत स्वच्छता के बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, किन्तु ट्रांसपोर्ट नगर की वास्तविक स्थिति इन दावों पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। वर्तमान स्थिति इस प्रकार है:

पुरे क्षेत्र में कूड़े का अंबार लगा हुआ है नियमित सफाई व्यवस्था पूर्णतः विफल दिखाई देती है

कई बार शिकायत करने के बावजूद कोई

प्रभावी कार्यवाही नहीं की गई

“अधिकारी मस्त, आम जनता पस्त” जैसी स्थिति स्पष्ट रूप से देखने को मिल रही है

गंभीर प्रश्न:

क्या स्वच्छ भारत अभियान केवल कागजी कार्यवाही तक ही सीमित रह गया है?

क्या राष्ट्रीय राजमार्ग 19 से ट्रांसपोर्ट नगर में आने वाली रोड़ आने वाली कॉलोनियों के नागरिकों को स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण में जीने का अधिकार नहीं है?

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि: क्षेत्र में तत्काल प्रभाव से नियमित एवं सुदृढ़ सफाई

व्यवस्था सुनिश्चित की जाए

कूड़ा उठाने हेतु पर्याप्त संसाधन एवं कर्मचारियों की व्यवस्था की जाए लापरवाही बरतने वाले संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाए

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस गंभीर समस्या को प्राथमिकता देते हुए शीघ्र एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करेंगे।

“सुनवाई कब होगी, नगर आयुक्त महोदय?”

भवदीय,

विनोद दीक्षित

संस्थापक अध्यक्ष

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : “महादेव बेटिंग ऐप वापस आ गया है — गैरकानूनी, जोखिम भरा और खतरनाक। तेज पैसे के जाल में न फँसें।”



पिकी कुलु

बैन किया गया महादेव बेटिंग ऐप अप्रैल 2026 में नए नाम “महादेव” के तहत फिर से सामने आया है। यह IPL 2026 की शुरुआत और आगामी विधानसभा चुनावों के साथ मेल खाता है। पहले की कार्रवाई और कानूनी प्रतिबंधों के बावजूद, यह प्लेटफॉर्म फिर से सक्रिय बताया जा रहा है और खेल, चुनावों तथा विवादस्पद गेम्स पर सट्टेबाजी की सुविधा दे रहा है।

मुख्य घटनाक्रम

1. रिब्रांडिंग: महादेव ऐप अब “महादेव” नाम से वापस आया है, ताकि बैन से बच सके।
2. समय: इसका पुनः उदय IPL 2026 और कई राज्यों के विधानसभा चुनावों के साथ हुआ है,

जिससे सट्टेबाजी गतिविधियाँ बढ़ रही हैं।

3. सट्टेबाजी का दायरा: क्रिकेट से आगे बढ़कर चुनावों, सट्टेप गेम्स और अन्य आयोजनों पर भी दांव लगाए जा रहे हैं।
4. ऑपरेशन: यह ऐप प्रॉक्सि लिंक और रिब्रांडेड साइट्स के जरिए चल रहा है, जिससे कार्रवाई करना कठिन हो रहा है।
5. प्रमोटर्स: रिपोर्ट्स इसे पहले से जांचे गए व्यक्ति जैसे सौरभ चंद्राकर से जोड़ती हैं।

जोखिम और चिंताएँ

1. कानूनी स्थिति: यह ऐप भारतीय कानून के तहत अब भी बैन है, क्योंकि ऑनलाइन मनी गेम्स और बेटिंग गैरकानूनी घोषित करना कठिन हो रहा है।
2. चुनाव की निष्पक्षता: विधानसभा चुनावों पर दांव लगाने से राजनीतिक हेरफेर और जनविश्वास पर असर पड़ सकता है।

3. जनहानि: ऐसे प्लेटफॉर्म वित्तीय धोखाधड़ी, लत और मनी लॉर्डिंग को बढ़ावा देते हैं, अक्सर कमजोर उपयोगकर्ताओं को निशाना बनाते हैं।

4. कानून प्रवर्तन चुनौती: पहले की कार्रवाई के बावजूद, रिब्रांडिंग और प्रॉक्सि ऑपरेशन इसे स्थायी रूप से बंद करना कठिन बना रहे हैं।

साइबर सुरक्षा और कानून प्रवर्तन पर असर

1. डिजिटल अपराध नेटवर्क: इसका पुनः उदय दिखाता है कि अवैध सट्टेबाजी सिंडिकेट्स तकनीक का इस्तेमाल कर कितनी जल्दी अनुकूलन कर लेते हैं।
2. क्रॉस-बॉर्डर ऑपरेशन: पहले 55+ देशों में गतिविधि रिपोर्ट हुई थी, इसलिए कार्रवाई के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग जरूरी है।
3. AI और ऑटोमेशन: ये प्लेटफॉर्म बड़े पैमाने पर सट्टेबाजी प्रबंधन, पहचान से बचने और loopholes का फायदा उठाने के लिए AI एजेंट्स का इस्तेमाल कर सकते हैं।

सुझाए गए कदम

1. जन-जागरूकता: IPL और चुनावों के दौरान महादेव जैसे बेटिंग ऐप्स के खतरों से आगाह करना,
2. साइबर सतर्कता: प्रॉक्सि साइट्स, पेमेंट गेटवे और संदिग्ध डिजिटल लेन-देन की निगरानी मजबूत करना।
3. कानूनी प्रवर्तन: रिब्रांडेड और विकेंद्रीकृत बेटिंग प्लेटफॉर्म को कवर करने के लिए कानून अपडेट करना।
4. सहयोग: राज्य पुलिस, साइबर सेल और वित्तीय नियामकों के बीच समन्वय कर ऐसे ऐप्स को ट्रैक और ब्लॉक करना।



महादेव बेटिंग ऐप 2026 में फिर वापस नया नाम पुराना जाल

धर्म अध्यात्म



तीन धर्मों का संगम रिवालसर

हिमाचल प्रदेश के कण-कण में ऋषि-मुनियों और देवी-देवताओं का वास रहा है। इस राज्य में छोटी काशी के नाम से सुविख्यात मंडी जिला वास्तव में धार्मिक और पर्यटन की दृष्टि से अत्यधिक सराबोर है। मंडी से लगभग 25 किमी. दूर रिवालसर झील प्राकृतिक सौंदर्य से लबालब है, जहां से हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित पहाड़ियों के नयनाभिराम दृश्य सैलानियों को आत्मविभोर कर देते हैं। रिवालसर हिंदू, सिख और बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अति पूजनिय एवं श्रद्धा का केंद्र है। किंवदंतियों अनुसार मंडी के राजा अशंधारा की पुत्री मंदरवाह ने राजसी सुख-सुविधाओं को छोड़कर धर्म और त्याग का मार्ग चुनने का निर्णय लिया। राजा अशंधारा ने अपनी पुत्री के निर्णय को शिरोधार्य करते हुए उसे शांतरक्षिता नामक बौद्ध विद्वान, जोकि पद्मसंभव के छोटे भाई थे, के पास शिक्षा ग्रहण हेतु छोड़ दिया। गुरु पद्मसंभव ने राजकुमारी को शिक्षा देना शुरू किया। कहा

जाता है कि एक ग्वाले ने जब यह सब देखा तो उसने अफवाह फैला दी कि उसने राजकुमारी को एक मायावी व्यक्ति के साथ देखा है। जब यह बात राजा तक पहुंची, तो उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने सोचा कि उनकी बेटी अपनी ही प्रतिज्ञा का उल्लंघन कर किसी अनजान व्यक्ति से प्रेम प्रसंग कर रही है। राजा के आदेशानुसार राजकुमारी को कांटों से भरे गहरे गड्ढे में डाल दिया और गुरु पद्मसंभव को लकड़ी की सीढ़ी से बांधकर आग में झोंक दिया। कहा जाता है कि लगभग एक सप्ताह पश्चात भी जब वहां से धुआं नहीं छटा तो राजा ने स्वयं जाकर देखा तो वह हतप्रभ रह गया, क्योंकि वह स्थान तो एक झील में परिवर्तित हो चुका था और उसके मध्य में एक कमल का फूल खिला था, जो संभवतः गुरु पद्मसंभव का ही प्रतिरूप था। इस पर राजा को अत्यधिक पश्चाताप हुआ और राजा ने प्रायश्चित्त करते हुए पद्मसंभव को अपना संपूर्ण राज्य सौंप दिया और अपनी बेटी राजकुमारी

मंदरवाह का विवाह उस से कर दिया। बौद्ध धर्म के अनुयायी रिवालसर को 'पद्मकन' के नाम से भी निर्बाध संबोधित करते आ रहे हैं। दूसरी ओर, इतिहास के अनुसार स्कंदपुराण के हिमवान खंड के प्रथम, द्वितीय व तृतीय अध्यायों में हृदयलेश का वर्णन लोमश ऋषि की तपस्थली के रूप में आता है। पूर्वकाल में श्री लोमश ऋषिजी हिमालय पर्वत पर तपस्या कर रहे थे, इसी दौरान लोमश ऋषि ने ब्रह्म पर्वत पर चढ़कर एक तालाब देखा। पर्वतों से घिरे हुए इस तालाब में स्नान कर लोमश ऋषि बहुत प्रसन्न हुए और इसके किनारे तपस्या करने बैठ गए। कुछ देर बाद लोमश ऋषि को निद्रा आ गई। स्वप्न में उन्होंने एक भस्म और रुद्राक्ष माला धारण किए हुए एक यति को देखा, यति ने लोमश ऋषि को इस स्थल पर तप करने को कहा। तब लोमश ऋषि ने इस तालाब की पश्चिम दिशा में कठोर तपस्या करनी शुरू की। भगवान शिव ऋषि की अर्द्ध तपस्या से अत्यधिक प्रसन्न हुए और पार्वती सहित इस

तालाब में भूखंड पर नहल का रूप धारण कर नौकायान करने लगे। लोमश ऋषि अपनी तपस्या समाप्त कर सरोवर की ओर देखकर अचंभित हो जाते हैं कि यह कौन सी माया है? तब प्रसन्न होकर शिव पार्वती उन्हें दर्शन देते हैं। लोमश ऋषि पूजन कर शिव स्तुति करने लगे। यह स्तुति नी शालोंकी वाली है, जिसे भगवान शिव ने नवरत्न कहा है। लोमश ऋषि ने भगवान शिव से इस तालाब का महत्त्व पूछा। इस संवाद के दौरान विष्णु, ब्रह्मा, इंद्र आदि देवता किन्नर नागदि तीर्थराज प्रयाग, पुष्कर सहित सभी पवित्र तीर्थ हुए। ब्रह्मा, विष्णु, गणपति, सूर्य एवं शिव पार्वती सहित पांच देवताओं भूखंड में निवास कर झील में तैरने लगे तथा यहां पर इन टीलों बेंड़ों में निवास करने का निश्चय किया, जिस कारण रिवालसर को पंचपुरी यानी जहां पांच देवता वास करते, के नाम से जाना जाता है। बैसाखी पर्व पर यहां सभी धर्मों के श्रद्धालुओं का महासैलाब उमड़ पड़ता है।



कन्याकुमारी शक्तिपीठ

भारत के दक्षिणी छोर पर खड़ा कन्याकुमारी सिर्फ एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि आस्था, रहस्य और पौराणिक कहानियों से भरा एक जीवंत तीर्थ है। यहां पहुंचते ही तीन समुद्रों का संगम, तेज हवा और मंदिर की घंटियों की आवाज एक अलग ही एहसास देती है। कई लोग यहां सूर्योदय देखने आते हैं, तो कुछ अपने भीतर की शांति खोजने। लेकिन इस जगह की सबसे बड़ी पहचान है यहां स्थित कुमारी अम्मन मंदिर, जिसे एक शक्तिपीठ माना जाता है। अकसर लोगों के मन में सवाल उठता है कि आखिर इस स्थान का नाम 'कन्याकुमारी' क्यों पड़ा? इसके पीछे क्या कहानी है और देवी यहां कुंवारी रूप में क्यों पूजी जाती हैं? इन सवालों के जवाब सिर्फ धर्म में ही नहीं, बल्कि लोककथाओं और परंपराओं में भी छिपे हुए हैं। आइए इस पूरी कहानी को विस्तार से समझते हैं। जहां तीन समुद्र मिलते हैं और आस्था भी- तमिलनाडु के आखिरी छोर पर बसा कन्याकुमारी एक ऐसा स्थान है जहां हिंदू महाभारत, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी एक साथ मिलते हैं। यह दृश्य जितना भौगोलिक रूप से खास है, उतना ही धार्मिक नजरिए से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां स्थित कुमारी अम्मन मंदिर को शक्तिपीठों में गिना जाता है और मान्यता है कि यहां सती का एक अंग गिरा था। मंदिर में देवी को एक युवा कन्या के रूप में पूजा जाता है। दिलचस्प बात यह है कि यहां देवी का स्वरूप किसी मां या पत्नी का नहीं, बल्कि एक तपस्विनी कन्या का है, जो अपने आप में एक अलग ही पहचान बनाता है। पौराणिक कथा-कहानी शुरू होती है



बाणासुर नाम के एक शक्तिशाली राक्षस से। उसने भगवान शिव को प्रसन्न कर एक ऐसा वरदान हासिल किया, जिससे उसकी मृत्यु केवल एक कुंवारी कन्या के हाथों ही संभव थी। इस वरदान ने उसे लगभग अजेय बना दिया और उसने तीनों लोकों में आतंक मचाना शुरू कर दिया। देवता परेशान हो गए। कोई भी उसका सामना नहीं कर पा रहा था। तब सभी देवता भगवान विष्णु के पास पहुंचे और समाधान मांगा। यज्ञ से प्रकट हुई कन्याकुमारी-भगवान विष्णु के सुझाव पर देवताओं ने एक विशेष यज्ञ किया। इसी यज्ञ की अग्नि से देवी दुर्गा का एक अंश कन्या रूप में प्रकट हुआ, जिन्हें हम आज कन्याकुमारी के नाम से जानते हैं। देवी ने शिव से विवाह की इच्छा जताई और इसके लिए कठोर तपस्या शुरू कर दी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने विवाह के

लिए हामी भर दी। लेकिन यहीं से कहानी में एक मोड़ आता है। नारद की युक्ति और अधूरा विवाह-देवताओं को चिंता थी कि अगर देवी का विवाह हो गया, तो बाणासुर को कौन मारेगा। तब देवर्षि नारद ने एक योजना बनाई। जब भगवान शिव विवाह के लिए निकल रहे थे, तब नारद ने उन्हें रास्ते में इस तरह रोका कि विवाह का शुभ मुहूर्त निकल गया। मुहूर्त बीतते ही विवाह नहीं हो पाया। मान्यता है कि इससे नाराज होकर देवी ने विवाह की सारी तैयारियों को श्राप दे दिया, जो रेत और सीपियों में बदल गई। आज भी वहां की रेत और शंख-सीपियों को इस घटना से जोड़कर देखा जाता है। बाणासुर का अंत और देवी का संकल्प-विवाह न होने के बाद देवी फिर से तप करने लगीं हो गईं। उनकी सुंदरता और शक्ति की चर्चा बाणासुर तक पहुंची। वह

उन्से विवाह करने पहुंचा, लेकिन देवी ने उसे मना कर दिया। जब बाणासुर जबरदस्ती करने लगा, तो देवी ने उससे युद्ध किया। यह युद्ध काफी भयंकर था, लेकिन अंत में देवी ने उसे मार गिराया। इस तरह देवताओं को उसके आतंक से मुक्ति मिली। लेकिन इस पूरी घटना के बाद देवी ने जीवनभर कुंवारी रहने का संकल्प लिया और यहीं से इस स्थान का नाम पड़ा कन्याकुमारी। कन्याकुमारी मंदिर का धार्मिक महत्त्व-माना जाता है कि इस मंदिर की स्थापना भगवान परशुराम ने की थी। यहां आने वाले श्रद्धालु सिर्फ दर्शन ही नहीं करते, बल्कि समुद्र में स्नान भी करते हैं, जिसे पवित्र माना जाता है। स्थानीय लोग देवी को भगवती अम्मन या कुमारी अम्मन के नाम से पुकारते हैं। मान्यता है कि यहां संकल्प मन से प्रार्थना करने पर मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

आस्था और आध्यात्मिकता का संगम नीलकंठ महादेव

हिमालय की गोद में बसे उत्तराखंड के आध्यात्मिक नगर ऋषिकेश के समीप पौड़ी गढ़वाल जिले में मणिकूट पर्वत पर स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर भारतीय धार्मिक परंपरा, पौराणिक स्मृतियों और प्रकृति की दिव्यता का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। घने जंगलों और ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं के बीच लगभग 3500 फुट की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर केवल एक तीर्थस्थल ही नहीं, बल्कि त्याग, करुणा और लोकमंगल के प्रतीक भगवान शिव की महान कथा का जीवंत प्रतीक भी है। यहां की शांत वायुमंडलीय ऊर्जा, गंगा तट की आध्यात्मिकता और हिमालयी प्रकृति का सौंदर्य मिलकर इसे श्रद्धालुओं के लिए एक अद्वितीय साधना स्थल बना देते हैं। भारतीय पुराणों में वर्णित महान घटना समुद्र मंथन से इस पवित्र स्थल का गहरा संबंध माना जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार जब देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र मंथन किया, तो सबसे पहले अमृत विनाशकारी 'हलाहल' विष प्रकट हुआ। इस विष की तीव्रता इतनी भयावह थी कि उससे संपूर्ण सृष्टि के विनाश का संकट उत्पन्न हो गया। उस समय सृष्टि की रक्षा के लिए भगवान शिव ने करुणा और त्याग का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उस विष का पात्र बन लिया। किंतु विष को शरीर में फैलने से रोकने के लिए उनकी अद्भुत शक्ति ने उनका कंठ दबा दिया, जिससे वह विष उनके गले में ही ठहर गया। विष के प्रभाव से उनका कंठ नीला पड़ गया और तभी से भगवान शिव 'नीलकंठ' के नाम से विख्यात हुए। यह कथान केवल धार्मिक आस्था का आधार है, बल्कि मानवता की रक्षा के लिए आत्मबलिदान की महान प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भी है।



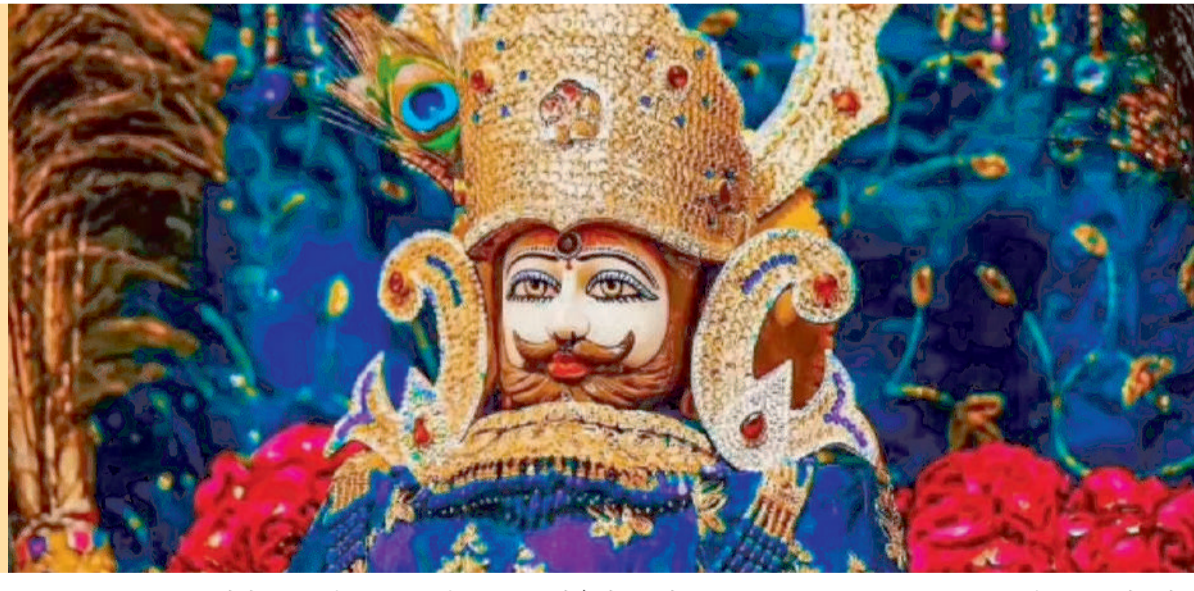
का प्रयास करते हैं। भौगोलिक दृष्टि से भी यह मंदिर अत्यंत रमणीय और आकर्षक स्थान पर स्थित है। ऋषिकेश से लगभग 30-32 किमी. की दूरी पर स्थित यह तीर्थ घने जंगलों, पहाड़ी रास्तों और प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा हुआ है। राम झूला और स्वर्ग आश्रम के मार्ग से होकर यहां पहुंचने की यात्रा स्वयं में एक आध्यात्मिक अनुभव बन जाती है। मार्ग में हिमालयी वनस्पतियों की सुगंध, पहाड़ों की शीतल वायु और गंगा घाटी का दृश्य यात्रियों को एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है। धार्मिक आस्था की दृष्टि से नीलकंठ महादेव मंदिर अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धपीठ माना जाता है। यहां आने वाले भक्त भगवान शिव को गंगाजल अर्पित कर मन्तव का धागा बांधते हैं और विश्वास करते हैं कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना अवश्य पूर्ण होती है। विशेष रूप से महाशिवरात्रि और सावन के पवित्र महीने में यहां लाखों श्रद्धालु और कांबड़िए जलाभिषेक करने आते हैं। उस समय पूरा नहीं, बल्कि शिव की तपस्या और लोकमंगल की भावना का प्रतीकात्मक केंद्र भी बन गया है। नीलकंठ महादेव मंदिर की स्थापत्य कला भी उतनी ही आकर्षक और विशिष्ट है। मंदिर की संरचना में द्विबिड़ उसके शिखर और दीवारों पर उकेरे गए समुद्र मंथन के दृश्य भारतीय मूर्तिकला की अद्भुत कलात्मकता को दर्शाते हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार पर भगवान शिव के विषपान की चित्रण श्रद्धालुओं को उस महान त्याग की याद दिलाता है, जिसने सृष्टि को विनाश से बचाया था। मंदिर परिसर में स्थित प्राकृतिक जलधारा श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्त्व रखती है, जहां भक्तपूजा दर्शन से पूर्व स्नान कर स्वयं को शुद्ध करने

शीश के दानी: बाबा खाटू श्याम का संपूर्ण इतिहास और महिमा

खाटू श्याम जी को कलियुग का सबसे महान अवतार माना जाता है। भक्त उन्हें 'हारे का सहारा' और 'लखदातार' के नाम से पुकारते हैं। राजस्थान के सीकर जिले में स्थित उनका भव्य मंदिर करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। यहाँ बाबा खाटू श्याम के इतिहास, उनके बलिदान, मंदिर की महिमा और उनके जीवन बाण प्रदान किए थे। इन बाणों की विशेषता यह थी कि: पहला बाण: उन सभी लक्ष्यों को चिन्हित करता था जिन्हें नष्ट करना हो। दूसरा बाण: उन लक्ष्यों को सुरक्षित करता था जिन्हें बचाना हो। तीसरा बाण: चिन्हित किए गए लक्ष्यों को क्षण भर में नष्ट कर देता था। इन तीन बाणों के कारण बर्बरीक संपूर्ण ब्रह्मांड को कुछ ही मिनटों में समाप्त करने की शक्ति रखते थे। इसी कारण उन्हें रतीन बाण धारी भी कहा जाता है। 3. महाभारत में युद्ध और कृष्ण की परीक्षा जब महाभारत का युद्ध छिड़ा, तो बर्बरीक ने भी इसमें सम्मिलित होने का निर्णय लिया। माता को दिए वचन के अनुसार वे हारने वाले पक्षर की

ओर से लड़ने के लिए नीले घोड़े पर सवार होकर निकले। भगवान कृष्ण जानते थे कि यदि बर्बरीक युद्ध में उतरे, तो पांडवों की हार निश्चित हो जाएगी। क्योंकि जैसे ही कौरव हारने लगेंगे, बर्बरीक उनकी ओर हो जाएंगे, और जैसे ही पांडव हारने लगेंगे, वे फिर पाला बदल लेंगे। अंत में वे अकेले जीवित बचेंगे और दोनों सेनाएं समाप्त हो जाएंगी। भगवान कृष्ण ने एक ब्राह्मण का भेष धरकर बर्बरीक का मार्ग रोका और उनकी शक्ति की परीक्षा लेनी चाही। कृष्ण ने कहा, रयिद तुम इतने ही बड़े धनुर्धर हो, तो इस पीपल के पेड़ के हर पत्ते को एक ही बाण से छेद कर दिखाओ। बर्बरीक ने बाण चलाया, जिसने पेड़ के सभी पत्तों को छेद दिया और अंत में कृष्ण के पैर के चारों ओर घूमने लगा, क्योंकि कृष्ण ने एक पत्ता अपने पैर के नीचे दबा लिया था। बर्बरीक ने विनम्रता से कहा, रभगवन, अपना पैर हटा लीजिए, अन्यथा बाण आपके पैर को भी छेद देगा। 4. शीश का दान कृष्ण समझ गए कि बर्बरीक को युद्ध से रोकना अनिवार्य है। उन्होंने बर्बरीक से दान मांगा। बर्बरीक ने सहर्ष स्वीकार किया। तब कृष्ण ने उनका शीश मांग लिया। बर्बरीक स्तब्ध रह गए, लेकिन अपने वचन से पीछे नहीं हटे। उन्होंने केवल एक प्रार्थना की कि वे महाभारत का युद्ध देखना चाहते हैं। फाल्गुन मास की द्वादशी को बर्बरीक ने अपने हाथ से अपना शीश काटकर कृष्ण को सौंप दिया। कृष्ण ने उनके शीश को अमृत से सींचकर एक ऊँची पहाड़ी पर रख दिया, जहाँ से वे पूरा युद्ध देख सकें। 5. वरदान और खाटू में स्थापना युद्ध समाप्त होने पर जब पांडव अपनी वीरता का बखान करने लगे, तो कृष्ण ने कहा कि इसका निर्णय बर्बरीक का शीश करेगा क्योंकि उसने

खाटू श्याम वास्तव में महाभारत काल के महान योद्धा बर्बरीक हैं। वे गदाधारी भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र थे। बचपन से ही वे बहुत वीर और महान धनुर्धर थे। उनकी माता अहिलवती (कहीं-कहीं मौरवी) ने उन्हें संस्कार दिए थे कि हमेशा उस पक्ष की ओर से लड़ना जो हार रहा हो। इसी कारण उन्हें हरारे का सहारा कहा जाता है।



निष्पक्ष होकर युद्ध देखा है। बर्बरीक के शीश ने गवाही दी कि उन्हें रणभूमि में केवल कृष्ण का सुदूरतम चक्र घूमना हुआ और द्रौपदी के रूप में महाकाली का खप्पर भरता हुआ दिखाई दिया। कृष्ण बर्बरीक के महान बलिदान से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने वरदान दिया: 'कलियुग में तुम मेरे 'श्याम' नाम से पूजे जाओगे। जो भी भक्त सच्चे मन से तुम्हारे दर पर आएगा और 'हारे का सहारा' पुकारेगा, उसकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।' कालांतर में उनका शीश खाटू (राजस्थान) की धरती में दफन हो गया। कहा जाता है कि एक गाय वहां खड़ी होकर अपने स्तनों से दूध की धारा बहाने लगी। खुदाई करने पर वहां वह शीश मिला, जिसे खाटू के राजा ने मंदिर बनवाकर स्थापित किया। 6. खाटू श्याम मंदिर की वास्तुकला और दर्शन

खाटू का मंदिर वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। मंदिर को सफेद मकराना संगमरमर से बनाया गया है। गर्भगृह: यहाँ बाबा श्याम का केवल शीश विराजमान है, जिसे बहुत सुंदर तरीके से फूलों और गहनों से सजाया जाता है। श्याम कुंड: मंदिर के पास ही श्याम कुंड है। मान्यता है कि यहीं से बाबा का शीश प्रकट हुआ था। यहाँ स्नान करने से चर्म रोगों और पापों से मुक्ति मिलती है। 7. प्रमुख उत्सव: फाल्गुन मेला खाटू श्याम जी का सबसे बड़ा उत्सव फाल्गुन मेला है, जो फाल्गुन शुक्ल षष्ठी से द्वादशी तक चलता है। निशान यात्रा: लाखों भक्त रिंगस से खाटू धाम

तक पैदल यात्रा करते हैं। वे हाथों में 'निशान' (रंगीन ध्वज) लेकर बाबा के जयकारे लगाते हुए चलते हैं। भजन संस्था: देश के प्रसिद्ध गायक बाबा के दरबार में हाजिरी लगाते हैं। गुलाल और फूल: इस मेले में पूरा खाटू नगर गुलाल और फूलों की खुराबू से सराबोर रहता है। 8. बाबा के विभिन्न नाम और उनका अर्थ हारे का सहारा: जो दुनिया से हार चुका हो, उसे बाबा जीत दिलाते हैं। लखदातार: जो एक मांगने पर लाख गुना देता है। शीश का दानी: जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना सिर दान कर दिया। मोर्वीनंदन: माता मौरवी (अहिलवती) के पुत्र। नीले घोड़े का सवार: उनका वाहन नीला घोड़ा है। 9. आज के समय में आस्था वर्तमान में खाटू श्याम जी की महिमा केवल

बोली खाटू नरेश की जय! शीश के दानी की जय!

सुकमा में 159वीं बटालियन सीआरपीएफ ने मनाया शौर्य दिवस, शहीदों को दी श्रद्धांजलि

9 अप्रैल वीरता और बलिदान का प्रतीक दिवस-कमांडेंट कुमार मयंक

सुकमा में 159वीं बटालियन के वीर जवानों को शौर्य दिवस (सीआरपीएफ) मुख्यालय सुकमा में गुरुवार को शौर्य दिवस श्रद्धा, सम्मान और गर्व के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कमांडेंट कुमार मयंक ने देश की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीद जवानों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में अधिकारियों एवं जवानों ने शहीदों

के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनके बलिदान को याद किया। कमांडेंट कुमार मयंक ने अपने संबोधन में कहा कि 9 अप्रैल का दिन सीआरपीएफ के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। यह दिन न केवल सीआरपीएफ बलिक समस्त सुरक्षा बलों के लिए गर्व और प्रेरणा का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि 9 अप्रैल 1965 को गुजरात के कच्छ के रणस्थित सरदार और टाक पोस्ट पर तैनात सीआरपीएफ के जवानों ने अद्वितीय साहस और वीरता का परिचय दिया था।

उन्होंने विस्तार से बताया कि उस दिन करीब 3:30 बजे पाकिस्तान की 51वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड के लगभग 3500 सैनिकों ने "ऑपरेशन डेजेंट हॉक" के तहत अचानक हमला कर भारतीय सीमा में घुसपैठ करने का प्रयास किया। इसके बावजूद सीआरपीएफ की द्वितीय वाहिनी की चार कंपनियों ने सीमित संसाधनों के बीच भी दुश्मन का डटकर मुकाबला किया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इस संघर्ष में पाकिस्तान के 34 सैनिक मारे गए तथा 4 सैनिकों को ज़िंदा गिरफ्तार किया

गया। वहीं, सीआरपीएफ के 8 जवान वीरगति को प्राप्त हुए और 19 जवानों को दुश्मन ने बंदी बना लिया। बावजूद इसके, जवानों ने करीब 12 घंटे तक दुश्मन को रोके रखा और उनके नापाक मंसूबों को विफल कर दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित अधिकारियों और जवानों ने शहीदों के बलिदान को नमन करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। इस प्रकार 9 अप्रैल 2026 को शौर्य दिवस के रूप में मनाते हुए वीर जवानों की बहादुरी और बलिदान को याद किया गया।



निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर का हुआ आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। होम्योपैथी के जनक डा हैनीमन की जयन्ती के पूर्व दिवस पर गुरुवार को सीनियर सीटिजन केयर सेंटर में वृद्ध निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ महापौर डा. मंगलेश श्रीवास्तव, उप नगर आयुक्त प्रमोद कुमार, जिला होम्योपैथिक ऑफिसर डा दिग्विजय दास, डा रुप कुमार बनर्जी, श्रीमती चैतली बनर्जी, डा सौम्यो रतन बनर्जी, डा अरुणिमा बनर्जी, डा सुब्रत शर्मा आदि ने दी। प्रज्वलित कर एवं डा हैनिमन के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर महापौर ने कहा कि डा हैनिमन की चिकित्सा पद्धति सर्वसुलभ एवं जन जन के लिए लाभदायक है। आज सीनियर सिटीजन केयर सेंटर की एक सफलता है कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए महत्वपूर्ण दिन पर यह शिविर लगाया गया है।



डा रुप कुमार बनर्जी ने कहा कि मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म है। होम्योपैथिक विधा के जन्मदाता के जन्मदिवस से पूर्व इस शिविर का आयोजन कर मैं और मेरा परिवार सेवा कार्य से आत्मिक संतुष्टि प्राप्त कर रहा है।

निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर में सीनियर सिटीजंस के साथ

ही साथ विभिन्न क्षेत्रों से आए लगभग 300 लोगों की जांच कर निशुल्क दवा प्रदान किया गया। इस अवसर पर डा सुब्रत कुमार, डिप्टी मेयर पवन कुमार त्रिपाठी, विष्णु देव शर्मा, अरविंद कुमार सिंह, धर्मेंद्र उपाध्याय, सीनियर सिटीजन केयर सेंटर के संरक्षक गिरिजा शंकर तिवारी, सौरभ पांडे, मोहम्मद आज़म

अजय यादव, प्रह्लाद दास गुप्त, श्रीमती पूजा गुप्ता, अशोक मिश्रा, विश्व बंधु गुप्ता, प्रमोद कुमार द्विवेदी, रमेशशंकर शुकल, के सी शुकल, दीपक चक्रवर्ती निशांत, विरेन्द्र पाल, एस एस दास, विनय कुमार शर्मा, पत्रकार संजय वर्मा, सुरेश चंद सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

मजदूरी में बड़ी बढ़ोतरी, सैनी सरकार के फैसलों से बदलेगा आमजन का भविष्य : उषा प्रियदर्शी

महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष ने कैबिनेट बैठक के फैसलों को बताया जनहितकारी -

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) भाजपा महिला मोर्चा हरियाणा की प्रदेश अध्यक्ष उषा प्रियदर्शी ने हरियाणा मंत्रीमंडल की बैठक में न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने सहित अन्य महत्वपूर्ण फैसलों का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों से प्रदेश के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर गरीब, मध्यम व युवा वर्ग को सीधा लाभ मिलेगा।

उषा प्रियदर्शी ने कहा कि मुख्यमंत्री नाथब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई मंत्रीमंडल की बैठक में अनेक जनहितकारी फैसले लिए गए हैं। इनमें प्रमुख रूप से प्रदेश में न्यूनतम मजदूरी 11 हजार 257 रुपये से बढ़ाकर 15 हजार 220 रुपये करना शामिल है, जिससे गरीब



और मध्यम वर्ग को राहत मिलेगी। इसके अलावा सरकार ने अग्निवीरों के लिए आरक्षण में वृद्धि करते हुए अग्निवीर नीति 2024 में संशोधन किया है। अब फॉरेस्ट गार्ड, माइनिंग गार्ड और वाइर पदों पर होरिजेंटल आरक्षण 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 20

प्रतिशत कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि सरकार ने वृद्धजनों को राहत देने के लिए रिटायरमेंट हाउसिंग पॉलिसी में संशोधन करते हुए एफएआर 2.25 से बढ़ाकर 3.0 करने का निर्णय लिया है, जो टीडीआर नीति 2021 के

अनुरूप है। महिला वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में राशन डिपो आवंटन में भी महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। इसके तहत महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है, जिसमें एसिड अटेक पीडित, स्वयं सहायता समूह और विधवाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। साथ ही 500 कार्ड पर लाइसेंस देने, आयु सीमा 60 से बढ़ाकर 65 वर्ष करने और मृत्यु की स्थिति में कानूनी वारिस को आवंटन करने जैसे फैसले भी शामिल हैं।

उषा प्रियदर्शी ने कहा कि सरकार द्वारा विलेज कॉमन लैंड नियमों और हरियाणा टीपीडीएस में संशोधन के निर्णय भी प्रदेश के विकास को गति देते और आमजन को सुविधा प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि ये सभी फैसले प्रदेश के समग्र विकास और जनकल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

मंडलाध्यक्ष की आधिकारिक यात्रा हुई सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। रोटी क्लब में गुरुवार को मंडलाध्यक्ष रो. डॉ. आशुतोष अग्रवाल की आधिकारिक यात्रा अत्यंत गरिमामय, प्रेरणाप्रद और संगठनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। इस विशेष कार्यक्रम में क्लब की कार्यकारिणी सभा एवं साधारण सभा की बैठक हुई, जिसमें सदस्यता विस्तार, सेवा परियोजनाओं, लेखा-जोखा, रोटी फाउंडेशन सहयोग तथा आगामी योजनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम ने यह स्पष्ट रूप से सिद्ध किया कि रोटी क्लब गोरखपुर सेवा, संवेदना, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व की दृष्टि से निरंतर एक सशक्त और विविधतापूर्ण पहचान स्थापित कर रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता क्लब अध्यक्ष रो. सतीश राय ने की। इस अवसर पर सचिव संचित श्रीवास्तव ने वर्ष भर की गतिविधियों का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि क्लब द्वारा इस वर्ष अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य संपन्न किए गए। उन्होंने बताया कि बीआरडी मेडिकल



कॉलेज में मरीजों के परिजनों को आहार उपलब्ध कराना, रक्तदान जैसे जीवनरक्षक अभियान संचालित करना, तथा मानसिक मंदित आश्रय गृह में वस्त्र एवं आहार वितरण जैसे कार्य क्लब की मानवीय संवेदना और सेवा-प्रतिबद्धता के सशक्त प्रमाण हैं। वहीं कोषाध्यक्ष रो. संजीव अग्रवाल ने वित्तीय स्थिति एवं संगठनात्मक

गतिविधियों का विवरण साझा किया। कार्यक्रम के संचालन और संयोजन में रो. दिनेश सिंह सारथी एवं रो. सुधांशु चंद्र की सक्रिय भूमिका रही। मंडलाध्यक्ष रो. डॉ. आशुतोष अग्रवाल ने क्लब की सेवा गतिविधियों को विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि रोटी क्लब गोरखपुर ने समाजोपयोगी कार्यों के माध्यम

से सेवा का एक अत्यंत प्रेरक मानक स्थापित किया है। कार्यक्रम में सचिव संचित श्रीवास्तव, पूर्व मंडलाध्यक्ष अनूप अग्रवाल, मंकेश्वर नाथ पांडेय, डॉ. आर.पी. शुकल, प्रवीर आर्या, डॉ. जी.डी. अग्रवाल, रो. संजीव अग्रवाल, डॉ. प्रीति अग्रवाल, रामपाल सिंह, बाल कृष्ण अग्रवाल, पूर्वी नारायण पांडेय, मनीष

जायसवाल, डॉ. सुधीर राय, आशीष जोशी, सर्वेश दूबे, श्रंयांश पाण्डेय, शुभेन्द्र श्रीवास्तव, डॉ. मिहिर, महेश गोपाल गर्ग, अग्रवाल, मंकेश्वर नाथ पांडेय, डॉ. आर.पी. शुकल, अनिल वालानी, अरशद जमाल समानी, रो. दिनेश सिंह सारथी तथा रो. सुधांशु चंद्र सहित अनेक गणमान्य रोटीरियंस उपस्थित रहे।

उसावा ब्लाक में कोटेदार एक यूनिट पर डेढ़ किलो राशन देता है कम बाल्टी से तौलकर कर रहा धांधली

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

बदायूं: उसावा ब्लाक के ग्राम तरसुरा में राशन को लेकर बड़ा घोटाला हो रहा है इसकी शिकायत पहले भी एक गांव के व्यक्ति ने की थी लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। आपको बताते चले कि ग्राम तरसुरा के पप्पू कोटेदार डीलर बाल्टी से तौल कर देते हैं राशन जो कि डेढ़ किलो राशन एक बार में जाता है कम और दो बार तौलते हैं तो 3 किलो कम देते हैं अगर गांव वाले कोई आवाज उठाने की बात करते हैं तो उन्हें धमकाते हैं जो कि इतनी शक्ति होते हुए भी कोटेदार डीलर कब तक यह धांधली चलाएंगे क्यों नहीं हो रही है इन पर कार्रवाई जो कि सरकार एक यूनिट पर 5 किलो राशन देती है लेकिन कोटेदार डीलर एक यूनिट पर 4 किलो राशन देते हैं। यह सब धांधली क्यों आप वीडियो और फोटो में साफ देख सकते हैं बाल्टी दिख रही है। क्यों नहीं हो रही है इन पर कोई कार्रवाई आपको बताते चले पूरा मामला उसावा ब्लॉक ग्राम पंचायत मसूदपुर की तरसुरा गांव का है



पैतृक जमीन पर कब्जा कर भाई बना दबंग, हिस्सेदारी मांगने पर दी जान से मारने की धमकी

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

दातागंज: पैतृक संपत्ति को लेकर रिश्तों में दरार अब खुले संघर्ष में बदलती नजर आ रही है। शाहजहांपुर जनपद के थाना गढ़िया रंगीन क्षेत्र के ग्राम रामपुर निवासी राम भरोसे लाल ने अपने ही सगे भाई पर गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस से न्याय की गुहार लगाई है। पीड़ित का कहना है कि उसका भाई न सिर्फ पैतृक जमीन पर अवैध कब्जा किए हुए है, बल्कि उसे जान से मारने की धमकी देकर दबाव बना रहा है।

पीड़ित राम भरोसे लाल के अनुसार, करीब 35 वर्ष पूर्व पारिवारिक परिस्थितियों के चलते वह अपनी उससुराल में रहने लगे थे। इसी दौरान उनके सगे भाई संवेश पुत्र रामलाल ने उनकी अनुपस्थिति का फायदा

उठाकर पूरी पैतृक संपत्ति पर कब्जा कर लिया। हाल ही में जब पीड़ित अपने पैतृक गांव सैनपुर पहुंचे और अपने पैतृक हिस्से की मांग की, तो आरोपी ने खुलेआम दबंगई दिखाते हुए साफ इनकार कर दिया। पीड़ित का आरोप है कि विरोध करने पर आरोपी ने कहा कि रचाहे 10-20-50 लाख रुपये खर्च करने पड़ें, लेकिन तुम्हें जमीन में हिस्सा नहीं दोगे। इ इसके बाद उसे जान से मारने की धमकी देकर वहां से भगा दिया गया। पीड़ित का यह भी कहना है कि वह आरोपी अपने ससुराल पक्ष के लोगों को बुलाकर लगातार उसे और उसके परिवार को घेर रहा है, गाली-गलौज कर रहा है और मारपीट व हत्या की धमकियां दे रहा है।

मामले को और गंभीर बनाते हुए पीड़ित ने आरोप

लगाया है कि आरोपी का साला अवैध अफीम तस्करी जैसे संगीन अपराधों में लिप्त है, जिसके चलते आरोपी पक्ष खुद को प्रभावशाली समझकर कानून-व्यवस्था को चुनौती दे रहा है और खुलेआम दबंगई कर रहा है। इससे पूरे गांव में भय और तनाव का माहौल बना हुआ है।

पीड़ित ने कोतवाली दातागंज पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर पूरे मामले की निष्पक्ष जांच, आरोपियों के खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज करने, अपनी पैतृक संपत्ति में हक दिलाने तथा परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है। साथ ही चेतावनी दी है कि यदि जल्द न्याय नहीं मिला तो वह उच्चाधिकारियों, न्यायालय और मीडिया का सहारा लेने को बाध्य होगा।

दिल्ली स्थित चैरिटेबल स्कूल के खिलाफ गहरे षड्यंत्र की सीबीआई जांच की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अल्मोड़ा के दूरस्थ ग्राम डांडा-कांडा में पिछले दो दशकों से गरीब और अनाथ बच्चों को मुफ्त शिक्षा दे रही दि प्लेजेंट वैली फाउंडेशन अब एक बड़े आपराधिक षड्यंत्र का शिकार बन गई है। संस्था ने आरोप लगाया है कि नोएडा का कपड़ा व्यापारी और दोषसिद्ध अपराधी अपूर्वा जोशी उर्फ भैयाजी जोशी अपने गिरोह के साथ मिलकर स्कूल और उसकी संपत्ति पर कब्जा करने की साजिश चर रहा है। 16 अप्रैल 2026 को थाना गोविंदपुर में दर्ज एफआईआर संख्या 17/2026 में अपूर्वा जोशी, उसकी पत्नी, भाई और अन्य सहयोगियों पर आईटी

एक्ट और भारतीय न्याय संहिता की गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। इससे पहले भी 1 फरवरी 2026 को स्कूल की जमीन को अवैध रूप से बेचने की साजिश के आरोप में एक अन्य एफआईआर दर्ज हुई थी। (मामले ने तब सनसनीखेज मांडू लिया जब 17 फरवरी की रात कथित तौर पर पेट्रोल छिड़ककर स्कूल में आग लगाने की कोशिश की गई। जांच में इसे सुनियोजित साजिश बताया गया है, जिसका उद्देश्य चैरिटेबल संस्थान को पीछे तबाह करना था। इतना ही नहीं, आरोप है कि गिरोह डिजिटल और जमीनी स्तर पर भी दुष्प्रचार में जुटा है। फर्जी यूट्यूब वीडियो, भड़काऊ पोस्टर और "मारो-पीटो",

"स्कूल पर बुलडोजर चलाओ" जैसे खुले हिंसक आह्वान से इलाके में तनाव फैलाया जा रहा है। यहां तक कि विदेशी मीडिया संस्था का फर्जी रूप धारण कर लोगों को गुमराह करने के आरोप भी सामने आए हैं। गौरतलब है कि अपूर्वा जोशी को 2022 में एक अन्य मामले में दो साल की सजा सुनाई जा चुकी है, जिसे 2025 में भी बरकरार रखा गया। फाउंडेशन ने पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच के लिए CBI-SIT गठित करने की मांग की है। चेतावनी दी गई है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई तो मामला उच्चतम न्यायालय तक ले जाया जाएगा।



अटल विचार मंच के पदाधिकारियों ने भाजपा के संस्थापक सदस्य रहे वरिष्ठ नेताओं का किया सम्मान

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

कुंवरगांव: भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस पर अटल विचार मंच के पदाधिकारियों ने भाजपा के संस्थापक सदस्य रहे वरिष्ठ नेताओं का सम्मान किया। भाजपा आपदा राहत सेवा विभाग के जिला संयोजक एवं अटल विचार मंच के सचिव अजय शर्मा, प्रांतीय परिषद सदस्य जितेंद्र कुमार कश्यप एडवोकेट, चौधरी विजय पाल सिंह, ठाकुर रिशपाल सिंह, मदन लाल गुप्ता, डॉ. पंकज सिंह आदि ने भाजपा के संस्थापक सदस्य रहे सदस्यों का अंग वस्त्र एवं माला पहना कर सम्मान किया। संस्थापक सदस्यों में भाजपा के वरिष्ठ नेता हर प्रसाद सिंह पटेल, पूर्व जिला अध्यक्ष प्रोफेसर होत राम वर्मा एडवोकेट, प्रथम महामंत्री ठाकुर महेंद्र पाल सिंह, और सलारपुर के मंडल अध्यक्ष सहित वरिष्ठ पत्रकार विष्णु देव चांडक का माल्यांगण कर अंग वस्त्र भेज कर अभिनंदन किया गया। इस मौके पर अटल मंच के कार्यकर्ताओं ने संस्थापक सदस्यों से पार्टी के संघर्ष के दिनों के स्मरण भी सुन कर उनका मार्गदर्शन भी प्राप्त किया। ज्ञात रहे कि भारतीय जनता पार्टी का 1980 में प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन मुंबई में हुआ था जिसमें भाजपा के जिला अध्यक्ष रहे डॉक्टर राजेंद्र कुमार शर्मा के नेतृत्व में संस्थापक सदस्यों ने मुंबई जाकर अधिवेशन में भाग लिया था।



थाना मूसाझाग क्षेत्र में क्रेस्टा गाड़ी की टक्कर से बाइक सवार घायल

संवाददाता: शिवेंद्र यादव

मूसाझाग: बदायूं जिले के गांव मनिापुरा नई सड़क गंगा एक्सप्रेस वे रोड पर तेज रफ्तार क्रेस्टा फोर व्हीलर गाड़ी की टक्कर से बाइक सवार युवक घायल हो गया। घायल को उपचार के लिए नजदीकी जिला अस्पताल बदायूं में रेफर किया गया। घायल युवक की हालत ज्यादा सीरियस होने पर जिला अस्पताल के चिकित्सकों ने घायल व्यक्ति को बरेली रेफर किया।

थाना मूसाझाग क्षेत्र के मनिापुरा निवासी सन्जीव ने बताया कि रामू शर्मा 32 वर्षीय पुत्र प्रेमपाल शर्मा निवासी गांव फलिया थाना दातागंज जो कि वह अपने सादू राजीव शर्मा निवासी मनिापुरा कौर थाना मूसाझाग क्षेत्र से गुरुवार की सुबह लगभग 11:00 बजे को बाइक की सर्विस करवाने के लिए बदायूं जा रहे थे। इस दौरान जब वे गांव मनिापुरा कौर से गंगा एक्सप्रेसवे सर्विस रोड के बीच पहुंचे तो पीछे से आ रही एक तेज रफ्तार क्रेस्टा फोर व्हीलर गाड़ी ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी जिससे वह सड़क पर गिर गए और गंभीर रूप से घायल हो गए।

हादसे के बाद गाड़ी चालक को मौके पर पहुंच कर ग्रामीणों ने दबोच लिया। ग्रामीणों की सूचना पर डायल 112 पुलिस टीम ने पहुंच कर घायल बाइक सवार रामू शर्मा को बदायूं जिला अस्पताल में भर्ती करवाया। यहां पर चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बरेली अस्पताल रेफर कर दिया। सूत्रों द्वारा मिली जानकारी से पता चला है कि पुलिस ने क्रेस्टा फोर व्हीलर गाड़ी चालक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इस संबंध में थाना मूसाझाग प्रभारी निरीक्षक वीरेंद्र सिंह तोमर से जानकारी लेना चाह लेकिन उनका कॉल रिसेव नहीं हुआ।

वित्तीय खुफिया इकाई और भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के बीच ऐतिहासिक समझौता, साइबर धोखाधड़ी पर सख्ती

संगिनी घोष

मजबूत करना है।

भारत में साइबर अपराध और वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने के लिए वित्तीय खुफिया इकाई - भारत और भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के बीच एक ऐतिहासिक समझौता (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

इस समझौते का उद्देश्य दोनों एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना और प्रचालनगत जानकारी (Operational Intelligence) के विकास व आदान-प्रदान के जरिए वित्तीय अपराधों की रोकथाम को



साइबर अपराध पर मजबूत कार्रवाई

इस पहल के तहत साइबर धोखाधड़ी के पैटर्न की पहचान कर उन्हें रोकने के लिए संयुक्त प्रयास किए जाएंगे, जिससे नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

डिजिटल लेनदेन की सुरक्षा पर जोर

डिजिटल भुगतान के बढ़ते उपयोग को ध्यान में रखते हुए यह साझेदारी ऑनलाइन लेनदेन को अधिक सुरक्षित बनाने पर केंद्रित होगी।

जांच एजेंसियों को सहायता

यह समझौता जांच एजेंसियों को वित्तीय अपराधों की जांच में सहायता प्रदान करेगा और परिसंपत्ति वसूली को भी आसान बनाएगा।

बेहतर सूचना साझाकरण

दोनों एजेंसियों के बीच रियल-टाइम जानकारी साझा करने से कार्रवाई तेज और अधिक प्रभावी होगी।

ऐसे देखें तो यह समझौता भारत के डिजिटल वित्तीय तंत्र को सुरक्षित और मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्य बिंदु

* वित्तीय खुफिया इकाई - भारत और भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के बीच MoU

* साइबर धोखाधड़ी और वित्तीय अपराधों पर फोकस

* प्रचालनगत जानकारी और डेटा साझा करने पर जोर

* डिजिटल लेनदेन को सुरक्षित बनाने की पहल

* जांच एजेंसियों को सहायता और परिसंपत्ति वसूली

* साइबर सुरक्षा ढांचे को मजबूत करने की दिशा में कदम

SEO Meta Description:

वित्तीय खुफिया इकाई और भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के बीच समझौता, साइबर धोखाधड़ी रोकने और डिजिटल लेनदेन सुरक्षित करने पर जोर।



तारबाहर गुडशेड शिफ्ट होगा, 15 दिन में कार्रवाई का भरोसा

सुनील चिंचोकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। रेलवे माल गोदाम मार्ग पर भारी वाहनों के अनियंत्रित संचालन से बढ़ते खतरे को देखते हुए प्रशासन सक्रिय हो गया है। एनएफआईटीयू के प्रतिनिधिमंडल ने एएसएसी को जापान सौंपने के बाद डीआरएम से चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल के ईश्वर सिंह चंदेल ने बताया कि चर्चा के बाद 15 दिनों के भीतर तारबाहर गुडशेड को हटाने और माल लदान का काम उस्तापुर साइडिंग में शिफ्ट करने का आश्वासन दिया गया है। साथ ही सुबह 7 बजे से रात 8 बजे तक भारी वाहनों की एंट्री पर रोक लगाने की मांग भी रखी गई है। क्षेत्र

में गल्ला बाजार और स्कूलों के कारण दिनभर भारी आवागमन रहता है, जिससे हादसों का खतरा बना रहता है।

डीआरएम बिलासपुर ने आश्वासन दिया है कि अगले 15 दिनों के भीतर तारबाहर गुडशेड को वहाँ से हटा दिया जाएगा। भारी वाहनों और माल लदान के कार्य को शहर के बाहर उस्तापुर जैसी रेलवे साइडिंग पर शिफ्ट किया जाएगा, जो सीधे राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ी हुई है। इससे भारी वाहनों को शहर के रिहायशी इलाकों में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं होगी।

संगठन ने सुरक्षा के मद्देनजर सुबह 7:00 से रात 8:00 बजे तक



भारी वाहनों के प्रवेश को पूर्णतः प्रतिबंधित करने का आग्रह किया है। इस कदम से भविष्य में होने वाली दुर्घटनाओं पर लगाम लगेगी

और स्थानीय निवासियों व स्कूलों बच्चों को सुगम यातायात की सुविधा मिल सकेगी। प्रतिनिधिमंडल में ईश्वर सिंह

चंदेल, जीत सिंह, राशिद अली, बलजीत सिंह, महावीर सिंह, इम्तियाज अली, गुरमीत सिंह राणा, विनोद पांडे, विक्रम सिंह,

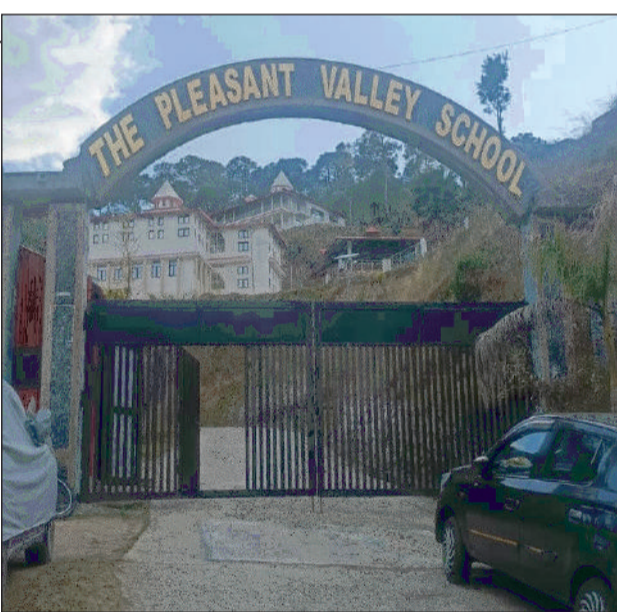
चंदन पांडे, संजू सिंह, साजू, समीम खान, धीरज यादव, सलीम खान, राजू खान सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

उत्तराखंड में एनजीओ के चैरिटेबल स्कूल पर संगठित हमले का सनसनीखेज मामला, सीबीआई जांच की मांग तेज

परिवहन विशेष न्यूज

अल्मोड़ा के दूरस्थ ग्राम डांडा-कांडा में पिछले दो दशकों से गरीब और अनाथ बच्चों को मुफ्त शिक्षा दे रही दि प्लेजेंट वैली फाउंडेशन अब एक बड़े आपराधिक षड्यंत्र का शिकार बन गई है। संस्था ने आरोप लगाया है कि नोएडा का कपड़ा व्यापारी और दोषसिद्ध अपराधी अपूर्वा जोशी उर्फ भैयाजी जोशी अपने गिरोह के साथ मिलकर स्कूल और उसकी संपत्ति पर कब्जा करने की साजिश रच रहा है।

6 अप्रैल 2026 को थाना गोविंदपुर में दर्ज एफआईआर संख्या 17/2026 में अपूर्वा जोशी, उसकी पत्नी, भाई और अन्य सहयोगियों पर आईटी एक्ट और भारतीय न्याय संहिता की गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। इससे पहले भी 1 फरवरी 2026 को स्कूल की जमीन को अवैध रूप से बेचने की साजिश के आरोप में



एक अन्य एफआईआर दर्ज हुई थी। मामले ने तब सनसनीखेज मोड़ लिया

जब 17 फरवरी की रात कथित तौर पर पेट्रोल छिड़ककर स्कूल में आग लगाने की

कोशिश की गई। जांच में इसे सुनियोजित साजिश बताया गया है, जिसका उद्देश्य

चैरिटेबल संस्थान को पूरी तरह तबाह करना था।

इतना ही नहीं, आरोप है कि गिरोह डिजिटल और जमीनी स्तर पर भी दुष्प्रचार में जुटा है। फर्जी यूट्यूब वीडियो, भड़काऊ पोस्टर और "मारो-पीटो", "स्कूल पर बुलडोजर चलाओ" जैसे खुले हिंसक आह्वान से इलाके में तनाव फैलाया जा रहा है। यहां तक कि विदेशी मीडिया संस्था का फर्जी रूप धारण कर लोगों को गुमराह करने के आरोप भी सामने आए हैं।

गौरतलब है कि अपूर्वा जोशी को 2022 में एक अन्य मामले में दो साल की सजा सुनाई जा चुकी है, जिसे 2025 में भी बरकरार रखा गया।

फाउंडेशन ने पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच के लिए CBI-SIT गठित करने की मांग की है। चेतवानी दी गई है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई, तो मामला उच्चतम न्यायालय तक ले जाया जाएगा।



विश्व स्वास्थ्य दिवस पर हुआ 'सम्पूर्ण ब्रम्हांड में विज्ञान सम्मत विधियों से उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति' विषय पर व्याख्यान

मुख्य अतिथि डॉक्टर श्रीधर द्विवेदी ने छात्रों को दिए स्वस्थ रहने के कई सूत्र

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

नई दिल्ली। लाजपत नगर की शहीद हेमू कॉलोनी के सीनियर सेकेंडरी स्कूल में विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर 'सम्पूर्ण ब्रम्हांड में विज्ञान सम्मत विधियों से उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति' विषय पर प्रधानाचार्य एन के शर्मा के संयोजन में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य महोदय ने इस दिवस की महत्ता बताते हुये उन्हें यह बताया कि अच्छी सेहत एक ऐसी सौगात है, जिसे आप खरीद नहीं सकते केवल अपनी अच्छी जीवन शैली से अर्जित कर सकते हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित नेशनल हाट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली के वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्रीधर द्विवेदी ने छात्रों को पावर प्वाइंट के माध्यम से स्वस्थ रहने के कई सूत्र बताते हुए कहा कि 1. उचित खानपान / नैसर्गिक वानस्पतिक भोजन /सात्विक, 2. सैर -व्यायाम, 3. योग और ध्यान, 4. न तम्बाकू न धूम्रपान, 5. जल्दी सोना, 6. जल्दी जगना, 7. न जंक फूड, 8. न क्रोध, 9. न मोबाइल का अतिशय उपयोग। व्यक्तिगत स्तर पर इन कार्यों के अतिरिक्त हमें सामाजिक स्तर पर भी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः कुरु मम सुप्रभातम्।। सर्वे भद्राणु पश्यन्तु, सर्वे संतु निरामया।' विश्व उदाहरणों के साथ बताया। अपने प्राचीन ग्रंथों



जैसे शुक्ल यजुर्वेद, गरुण पुराण, रामायण का उद्धरण देते हुये (ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्व शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ; ब्रह्मा मुरारी -त्रिपुरान्तकारी , भानुः शशिः भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः कुरु मम सुप्रभातम्।। सर्वे भद्राणु पश्यन्तु, सर्वे संतु निरामया।' विश्व शान्ति, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण स्वच्छता के

विषय में बताया और उनका आधुनिक चिकित्सा के मूलभूत सिद्धांतों से समन्वय करते हुये उन्हें अपने प्राचीन ज्ञान से परिचित कराया। अपने आस पास स्वच्छता, वृक्षों (खासकर औषधीय वृक्ष जैसे अर्जुन, पीपल / अक्षय, आमला आदि), नदियों, सरोवरों, बाग बगीचों का संरक्षण, सड़क पर पालनीय नियम जैसे कुछ खाकर -चबाकर थूकने की आदत से परहेज, ध्वनि प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण न करने के विषय में बताया। व्याख्यान के अंत में अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन द्वारा अनुमोदित जीवन के आठ

आवश्यक परीक्षण / जरूरतों जैसे (Life Simple Eight) शाकाहार, व्यायाम, धूम्रपान निषेध, वजन की जांच, शर्करा की जांच, बी पी की जांच, कोलेस्टेरॉल की जांच और अच्छी नींद के विषय में बताकर व्याख्यान का समापन किया।

पूरे कार्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता रही कुछ प्रश्न जो विद्यार्थियों ने पूछे। एक दृष्टि-दिव्यांग छात्र ने पूछा कि जब शासन को पता है कि अमुक वस्तु (धूम्रपान / तंबाकू) स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है तो उसे पूर्णतः प्रतिबंधित क्यों नहीं करती। उसका दूसरा

प्रश्न और भी महत्वपूर्ण था। वह था आजकल युवकों में जिम संस्कृति और जिम प्रोटीन के विषय में अतिशय लगाव।

डॉ. श्रीधर द्विवेदी ने तीन उदाहरण देकर जिम संस्कृति और जिम प्रोटीन के विषय में यथार्थ बताया और कहा कि शोशर छात्रों के लिए खुले खेल के मैदान, बाग-बगीचे में सैर और व्यायाम जिम जाने कहीं अधिक लाभदायक है। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य महोदय ने डॉ. श्रीधर द्विवेदी और उनके साथ उपस्थित सुश्री दोनी का सम्मान हरित-पौध, शाल तथा स्नेह भेंट से किया।

दिव्य स्व-स्पर्श

आज मैं एक भिन्न विषय पर बात कर रही हूँ। हमारा यह शरीर ईश्वर द्वारा रचित एक अत्यंत दिव्य व्यवस्था है— एक ऐसा साधन, जिसके माध्यम से हम साधना भी कर सकते हैं और जीवन के विविध अनुभवों को भी आत्मसात कर सकते हैं। हमारे शरीर को प्राप्त होने वाला प्रत्येक स्पर्श अनुभूति के नए मार्गों का सृजन करता है।

आज मैं स्व-स्पर्श की बात कर रही हूँ— एक ऐसा स्पर्श, जो हम स्वयं अपने ही अस्तित्व को प्रदान करते हैं। हमारे शरीर के कण-कण में चेतना व्याप्त है, और स्पर्श के माध्यम से हम उस चेतना को अनुभव कर सकते हैं। जब हम शांत होकर, पूर्ण सजगता के साथ अपने ही शरीर को प्रेमपूर्वक स्पर्श करते हैं— तो यहाँ मैं केवल निर्मल प्रेम की बात कर रही हूँ, वासना-प्रधान स्पर्श की नहीं।

जब यह स्पर्श निष्कलुष, कोमल और आत्मीय होता है, तब वह केवल देह तक सीमित नहीं रहता— वह भीतर की चेतना को भी स्पंदित करता है। ऐसे क्षणों में, हम स्वयं के अस्तित्व को, अपनी ही उपस्थिति को, और भीतर प्रवाहित हो रही दिव्य ऊर्जा को अनुभव कर सकते हैं। हाँ, यह अनुभव—निश्चित ही दिव्य हो सकता है अगर हम पूर्णतः अपने आप में उतर पाएँ तो।

सिंधी भाषा दिवस पर नवयुवकों को जोड़ने की पहल



सिंधी बोली भाषा को बढ़ावा देने हेतु युवाओं ने की संगोष्ठी मथुरा। सिंधी भाषा दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को गोवर्धन रोड स्थित श्रीजी शिवाशा शाखा

में लाड़ी लोहाणा सिंधी नवयुवक मंडल द्वारा सिंधी जागरूकता संगोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम के सूत्रधार सिंधी जागरूक मंच के संस्थापक किशोर इसरानी ने बताया कि 10 अप्रैल 1967 को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत की प्राचीन सिंधी भाषा को शामिल किया गया था तभी से सिंधी भाषा दिवस मनाया जाता है। उन्होंने एक खुशखबरी बताते हुए कहा कि सिंधी समाज अब देश का संविधान अपनी भाषा में पढ़ सकेगा। शुक्रवार को भारत सरकार द्वारा सिंधी समाज को एक सौगात मिलने जा रही है। 10 अप्रैल को देश के उपराष्ट्रपति सिंधी देवनागरी लिपि में लिखे गए देश के संविधान का विमोचन करेंगे। मुख्य अतिथि उप लाड़ी लोहाणा सिंधी पंचायत के प्रदेश महामंत्री रामचंद्र खत्री ने नवयुवक मंडल के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि किसी भी समुदाय की बोली भाषा तभी तक जीवित रह सकती है, जब तक वह नई पीढ़ी के पास भी सुरक्षित है। इसलिए बच्चों और युवाओं की ही यह विशेष जिम्मेदारी है कि वह अपनी मातृभाषा और बोली को बचाए रखें और घर परिवार में, आपस में सिंधी बोली में ही बात करें।

विशिष्ट अतिथि लाड़ी लोहाणा सिंधी पंचायत मथुरा के अध्यक्ष सुरेश मेटवानी ने कहा कि सिंधी भाषा दिवस हमें अपने अस्तित्व की याद दिलाता है, इस बहाने सिंधीयत के प्रति जागरूकता बनी रहती है। नवयुवक मंडल के संरक्षक गिरधारी नाथानी ने कहा कि सिंधी समुदाय की विरासत बोली और भाषा ही है, जो हमारी पहचान भी है, इसे विलुप्त होने से बचाने के लिए जरूरी है कि हम सिंधी बोली भाषा का प्रयोग करते रहें। युवा अक्षय तरुण लखवानी ने सिंधीयत को कायम रखने के लिए, सिंधी बोली को बढ़ावा देने पर बल देते हुए कहा कि बोली भाषा और सभ्यता से जब बच्चे संस्कारित होंगे तो वह मानवीय मूल्यों से भी परिपूर्ण होंगे, इसकी शुरुआत हर सिंधी परिवार में हो। वहीं नवयुवक मंडल के उपाध्यक्ष मनोहर मंगलानी, कोषाध्यक्ष दीपक टेंकवानी, महामंत्री तरुण नाजवानी, मंत्री दिनेश केवेलानी, संगठन मंत्री रवि चंदानी, पार्थ मेटवानी, संजय लखवानी आदि ने सिंधी भाषा दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की। संगोष्ठी के समापन पर सिंधी व्यंजन दाल पकान आदि परोसे गए। स्वागत लखवानी परिवार द्वारा किया गया। सिंधी भाषा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने की मुहिम चला रहे सिंधी जागरूक मंच के संस्थापक किशोर इसरानी ने बताया कि सिंधी नॉलेज नामक एक सिंधी चैनल चलाया जा रहा है, जिस पर सिंधी संस्कृति और विविध सिंधी कार्यक्रमों की झलकियां दिखाई जाती हैं। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि हर सिंधी परिवार 10 अप्रैल सिंधी भाषा दिवस पर बच्चों संग सिंधी लोकीगत भजन गाएं, सिंधी वीडियो देखें, सिंधी पुस्तकें पढ़ें तथा सिंधी व्यंजन बनाएं।



मैं उसके लिए हिंदी सी सरल, फिर भी दो मुझे अनभिन्न शब्दों में, हजारों अर्थों में पिरो जाता है, और वो मेरे लिए गणित सा कठिन हर बार मुझे, खुद में ही उलझता है, पर कितना भी उलझ जाऊं मैं हर बार उसका उत्तर शून्य ही आता है, ... जो मेरे पीछे-पीछे चलकर मेरी ही दिव्याता बढ़ाता है... !!!

वया किसान मिट्टी के स्वास्थ्य या बाजार की मांग को पूरा कर रहे हैं?

एक पुरानी खेती की कहावत है जिससे औद्योगिक कृषि के युग में काफी हद तक भुला दिया गया है: माटी को खिलाओ, पौधे को नहीं। यह उस ज्ञान की बात करता है जिसने सहस्राब्दियों से सभ्यताओं को बनाए रखा है — कि हमारे पैरों के नीचे की धरती न केवल जड़ों को पकड़ने का माध्यम है, बल्कि एक जीवित, सांस लेने वाला पारिस्थितिकी तंत्र है जिसका स्वास्थ्य इसके ऊपर सब कुछ का स्वास्थ्य निर्धारित करता है।

आज, वह ज्ञान संकट में है। नीचे की जीवित दुनिया एक चमक स्वस्थ मिट्टी में पृथ्वी पर जितने लोग हैं, उससे कहीं अधिक सूक्ष्मजीव होते हैं। बैक्टीरिया, कवक, प्रोटोजोआ, नेमाटोड्स, अर्थवर्म — जीवन की एक संपूर्ण सभ्यता जो पोषक तत्वों, गैसों और कार्बनिक पदार्थों के निरंतर आदान-प्रदान में लगी हुई है। यह भूमिगत अर्थव्यवस्था ही है जो मिट्टी को उपजाऊ बनाती है। यह मृत पदार्थ को तोड़ता है, हवा में नाइट्रोजन जमा करता है, बीमारियों को रोकता है, पानी को बरकरार रखता है, तथा पौधों की जड़ों तक खनिज पहुंचाता है, जिनका वे वास्तव में उपयोग कर सकते हैं।

स्वस्थ मिट्टी गंदगी नहीं है। गंदगी वह चीज है जो आप दशकों तक रासायनिक खेती करने के बाद क्षतिग्रस्त खेत में पाते हैं। मिट्टी जीवित है।

बाजार ने भूमि को कैसे नया रूप दिया
20वीं सदी के मध्य में हरित क्रांति ने कुछ उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की: इसने तेजी से बढ़ती वैश्विक जनसंख्या को पोषित किया। लेकिन ऐसा उन्होंने एक सौदे के माध्यम से किया, जिसकी पूरी लागत अभी स्पष्ट हो रही है। उच्च उपज वाली फसल किस्में, सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों और रासायनिक कीटनाशकों ने उत्पादन में नाटकीय रूप से वृद्धि की — और समान रूप से किसान और भूमि के बीच संबंध को सरल बना दिया।

खेती इनपुट-आउटपुट अर्थशास्त्र बन गया। प्रश्न यह था कि इस भूमि की क्या आवश्यकता है? से लेकर अधिकतम पैदावार उत्पन्न करने के लिए इस फसल को क्या चाहिए? तक

सिंथेटिक उर्वरकों ने मिट्टी के खाद्य जाल को पूरी तरह से बायपास कर दिया, तथा सूक्ष्मजीवों के बीच हस्तक्षेप किए बिना पौधों तक सीधे पोषक तत्व पहुंचा दिए। समय के



साथ, जो सूक्ष्मजीव समुदाय कभी यह काम करते थे, उनका उपयोग न होने के कारण उनमें कमी आई। कीटनाशकों से न केवल कीट ही मारे गए, बल्कि उन लाभकारी कीड़ों, कवक और बैक्टीरिया भी मारे गए जो पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते थे। एकाकी संस्कृतियों — एक ही फसल के विशाल खेत — ने भूमि को उस विविधता से मुक्त कर दिया जिस पर भूमिगत पारिस्थितिकी तंत्र निर्भर है।

वस्तुतः मिट्टी एक सफ़ाई बन गई। जड़ों को लंगर डालने और रासायनिक इनपुट प्राप्त करने का स्थान। साझेदार नहीं, बल्कि एक मंच।

बाजार का तर्क
बाजार मिट्टी को नष्ट करने के लिए नहीं निकला। इसने केवल पैदावार को ही पुरस्कृत किया। एक बुशल मकई की कीमत समान होती है, चाहे वह जीवित मिट्टी में उगाई गई हो या थकी हुई जमीन पर। जो किसान वर्षों तक जैविक पदार्थ बनाने में लगा, उसके लिए कोई प्रीमियम नहीं है। जिन लोगों ने अपने खेतों से सूक्ष्मजीवों का शोषण किया है, उनके लिए कोई ह्यूट नहीं है।

यह केन्द्रीय विफलता है: बाजार उस चीज को मापता है जिसे वह बेच सकता है, न कि उस चीज को जो वह देख नहीं सकता। और मृदा स्वास्थ्य — कार्बनिक पदार्थ और जैव विविधता का शांत, धीमा संचय जो दशकों से निर्मित हो रहा है — एक वस्तु विनिमय के लिए अदृश्य है। इसलिए किसान, अथक आर्थिक दबाव में, तर्कसंगत निर्णय लेते हैं जो सामूहिक रूप से विनाशकारी होते हैं। वे इस मौसम की पैदावार के लिए खेती करते हैं। वे आगले वर्ष की फसल के बदले उधार लेते हैं। जब मिट्टी प्रतिक्रिया करना बंद कर देती है, तो वे अधिक उर्वरक लगाते हैं, बजाय इसके कि यह पूछें कि उसने प्रतिक्रिया क्यों बंद कर दी।

संस्थाएं चिंताजनक हैं
वैश्विक एक तिहाई कृषि योग्य भूमि

काफी हद तक क्षतिग्रस्त हो चुकी है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि ऊपरी मिट्टी के नुकसान को वर्तमान दरों पर, मृदा संकट के खाद्य संकट बनने से पहले हमारी पास लगभग 60 फसल बचे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में, बड़े पैमाने पर खेती शुरू होने के बाद से मकई की पट्टी ने औसतन आधी ऊपरी मिट्टी खो दी है। जिसे बनाने में प्रकृति को हजारों साल लग गए, वह एक सदी में खर्च हो रहा है।

इस बीच, औद्योगिक कृषि वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 10% योगदान करती है। इसका अधिकांश हिस्सा भूरी मिट्टी से उत्पन्न होता है जो संहति कार्बन को वायुमंडल में वापस छोड़ देता है। स्वस्थ मिट्टी ग्रह के सबसे महत्वपूर्ण कार्बन सिंको में से एक है। क्षतिग्रस्त मिट्टी कार्बन स्रोत बन जाती है।

-जो किसान याद रखते हैं
हर कोई नहीं भूला। दुनिया भर में, किसानों का एक बढ़ता आंदोलन — पुनर्जन्मकारी कृषक, कृषि पारिस्थितिकीविद, परमाकल्चरिस्ट — सबसे पहले मिट्टी को खिलाने के तर्क को ओर लौट रहा है।

वे ऐसी चीजें कर रहे हैं जो औद्योगिक मानकों के अनुसार अकुशल प्रतीत होती हैं: सर्दियों में मैदान में आवरण फसलें छोड़ना ताकि मिट्टी के सूक्ष्मजीवों को भोजन मिल सके। जंगली झुंडों की आवाजाही की नकल करने के लिए पशुओं को चरागाह में घुमाना। एक ही खेत में दर्जनों प्रजातियां लगाना।

जुताई को कम करना या समाप्त करना ताकि जमीन में फैले फंगल के जाल को बाधित न किया जा सके। वर्षों और दशकों में संचित परिणाम आश्चर्यजनक हैं। जिन मिट्टी को कभी प्रति एकड़ 200 पाउंड सिंथेटिक नाइट्रोजन की आवश्यकता होती थी, वे अब अपनी ही स्थिति में आने लगी हैं। जिन खेतों में निर्गमित रूप से बाढ़ आती है, वे पानी को अवशोषित करने और उसे बनाए रखने लगते हैं। जो फसलें बीमारी से जूझ रही थीं, वे इसका विरोध करने

लगीं। भूमि को अपनी जटिलता पुनः प्राप्त करने का अवसर मिलने पर, वह पुनः भूमि की तरह व्यवहार करने लगती है।

बाजार और मिट्टी को पोषण देना

सवाल यह नहीं है कि क्या हम पुनर्जन्मात्मक तरीके से खेती कर सकते हैं। जो कुछ दांव पर लगा है, उसे देखते हुए सवाल यह है कि क्या हम ऐसा नहीं कर सकते। लेकिन यह परिवर्तन केवल इच्छाशक्ति से नहीं होगा। इसके लिए ऐसे बाजारों की आवश्यकता है जो मिट्टी के स्वास्थ्य को पुरस्कृत करते हैं, न कि केवल प्रमाण प्रणालियों, कार्बन क्रेडिट, सार्वजनिक खरीद नीतियों और पारिस्थितिक प्रबंधन के लिए किसानों को प्रत्यक्ष भुगतान के माध्यम से उपज देते हैं।

इसके लिए उपभोक्ताओं को यह समझना होगा कि सबसे सस्ता भोजन अक्सर सबसे महंगा भोजन होता है, जब आप उस मिट्टी का लेखा-जोखा करते हैं जिसे उसने नष्ट किया था, उसके द्वारा प्रदूषित पानी का तथा उसके द्वारा उत्सर्जित कार्बन का। और इसके लिए सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता है कि हम खेती को किस प्रकार समझते हैं - एक औद्योगिक निष्कर्ष प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित प्रणाली के साथ एक दीर्घकालिक बातचीत के रूप में।

निष्कर्ष
हमें मिट्टी अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिली। हम इसे अपने बच्चों से उधार ले रहे हैं। हर मौसम में हम मिट्टी के खर्च पर बाजार को खिलाने का निर्णय लेते हैं, इसलिए हम उस विरासत से थोड़ा अधिक खर्च करते हैं। प्रत्येक मौसम में हम मिट्टी को खिलाने के लिए चुनते हैं, हम एक जमा राशि बनाते हैं — धीमी, अदृश्य और किसी भी वस्तु विनिमय की कीमत से अधिक मूल्यवान।

प्रश्न तकनीकी नहीं है। हम जानते हैं कि स्वस्थ मिट्टी कैसे बनाई जाती है। सवाल यह है कि क्या हमने जो प्रणालियां बनाई हैं — आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक - वे हमें ऐसा करने का विकल्प चुनने देगीं। मिट्टी इंतजार कर रही है। यह उल्लेखनीय रूप से धैर्यवान है। लेकिन यह अनंत नहीं है।

डॉ. विजय गर्ग रिटायर्ड प्रिंसिपल एजुकेशनल कॉलमिस्ट एमिनेंट एजुकेशनलिस्ट स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब - 152107



संपादकीय

चिंतन-मगन

विज्ञान मेले से लेकर विज्ञान की सीमा तक: कल के खोजों के लिए युवा दिमाग का पोषण : डॉ. विजय गर्ग

विज्ञान मेले लंबे समय से स्कूल जीवन का एक परिचित और रोमांचक हिस्सा रहा है। हस्तनिर्मित मॉडलों की ध्वनि, रंगीन आरेखों से भरे चार्ट, और उत्सुक न्यायाधीशों को अपने विचार समझाने वाले उत्साही छात्र — ये क्षण जिज्ञासा और रचनात्मकता की भावना को पकड़ते हैं। लेकिन आज की तेजी से आगे बढ़ रही दुनिया में, विज्ञान मेले अब सिर्फ स्कूल के कार्यक्रम नहीं रहे; वे ऐसे कदम हैं जो युवा दिमाग को कक्षा प्रयोगों से लेकर वास्तविक वैज्ञानिक खोज की सीमा तक ले जा सकते हैं।

इसके लिए उपभोक्ताओं को यह समझना होगा कि सबसे सस्ता भोजन अक्सर सबसे महंगा भोजन होता है, जब आप उस मिट्टी का लेखा-जोखा करते हैं जिसे उसने नष्ट किया था, उसके द्वारा प्रदूषित पानी का तथा उसके द्वारा उत्सर्जित कार्बन का। और इसके लिए सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता है कि हम खेती को किस प्रकार समझते हैं - एक औद्योगिक निष्कर्ष प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित प्रणाली के साथ एक दीर्घकालिक बातचीत के रूप में।

विज्ञान मेले अपने मूल में जिज्ञासा पैदा करते हैं। एक सरल प्रश्न — आकाश का हर क्यों बदलता है? हम पानी कैसे बचा सकते हैं? क्या मशीनें मनुष्यों की तरह सोच सकती हैं? — अन्वेषण की यात्रा को जन्म दे सकती हैं। जब छात्र परियोजनाओं के माध्यम से ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं, तो वे वैज्ञानिकों की तरह सोचने लगते हैं। वे अवलोकन, परिकल्पना, प्रयोग और निष्कर्ष निकालना सीखते हैं। वे सिर्फ शैक्षणिक कौशल नहीं हैं; वे जीवन कौशल हैं जो आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं को आकार देते हैं।

विज्ञान मेले से लेकर विज्ञान की सीमा तक का परिवर्तन तब होता है जब जिज्ञासा अक्सर से मिलती है। आज, छात्रों को ऐसे उपकरणों और प्लेटफॉर्मों तक पहुंच प्राप्त है जिनके बारे में पिछली पीढ़ियां केवल सपने ही देख सकती थीं। इंटरनेट, ऑनलाइन प्रयोगशालाओं और ओपन-सोर्स प्रोग्रामिंग के साथ, एक छोटी स्कूल परियोजना कुछ प्रभावशाली हो सकती है। सौर ऊर्जा का प्रदर्शन करने वाली एक ऊर्जा ऊर्जाओं को बढ़ावा देने वाली एक वास्तविक पहल में बदल सकता है। एक साधारण कोडिंग परियोजना एक ऐसे पेप में विकसित हो सकती है जो स्थानीय समस्याओं का समाधान करता है। संभावनाएं अनंत हैं।

इस परिवर्तन में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केवल अंक और

प्रस्तुति पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, शिक्षकों को मौलिकता और प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। एक परियोजना जो असफल हो जाती है, लेकिन मूल्यवान सफल सिखाती है, वह उस परियोजना से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है जो परिपूर्ण है, लेकिन नकल की गई है। मार्गदर्शन, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन छात्रों को पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़ने और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का पता लगाने में मदद कर सकता है।

माता-पिता भी इस यात्रा में महत्वपूर्ण भागीदार हैं। अपने बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ावा देकर - चाहे वह संसाधन, समय या केवल प्रोत्साहन प्रदान करना हो - वे आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करते हैं। जो बच्चा समर्थन महसूस करता है, वह जोखिम उठाने, प्रश्न पूछने और स्वतंत्र रूप से सोचने की अधिक संभावना रखता है।

संस्थाओं और नीति निर्माताओं की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। स्कूलों को प्रयोगशालाओं, नवाचार केंद्रों और वैज्ञानिक संगठनों के साथ सहयोग में निवेश करना चाहिए। प्रतियोगिताओं में रचनात्मकता और समस्या समाधान को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, न कि ट-लॉगिंग को। ऐसे कार्यक्रम जो छात्रों को वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और नवप्रवर्तकों से जोड़ते हैं, स्कूल स्तर के छात्रों को उन्नत अनुसंधान के बीच की खाई को पाट सकते हैं।

भारत में, STEM शिक्षा को बढ़ावा देने वाली पहल पहले से ही आगे बढ़ रही हैं। हालांकि, यह सुनिश्चित करने की अभी भी आवश्यकता है कि ये अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों सहित देश के हर कोने तक पहुंचें। प्रतिभा भौगोलिक सीमा तक सीमित नहीं है; इसे चमकने के लिए केवल सही मंच की आवश्यकता होती है।

विज्ञान मेले से लेकर विज्ञान की सीमा तक का सफर सिर्फ भविष्य के वैज्ञानिकों को तैयार करने का नहीं है। यह एक ऐसे पीढ़ी का पालन-पोषण करने के बारे में है जो जिज्ञासु, नवीन और कल की चुनौतियों को हल करने में सक्षम हो - चाहे वह स्वास्थ्य देखभाल, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी या

अन्य क्षेत्र में हो। हर महान खोज एक साधारण विचार के रूप में शुरू हुई थी। और इनमें से कई विचार कक्षाओं में, स्कूल के विज्ञान मेलों की छोटी मेजों पर पैदा हुए थे। इन शुरुआतों को पोषित करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आज के युवा दिमाग कल के आगामी बन जाएं, ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाएं और एक बेहतर दुनिया का आकार दें।

कार्डबोर्ड ट्राइ-फोल्ड्स से भरे स्कूल जिम्नाजियम से वैश्विक अनुसंधान प्रयोगशाला के अत्याधुनिक स्तर तक की यात्रा सिर्फ एक कैरियर पथ से कहीं अधिक है। यह एक मानसिकता का विकास है। बचपन में यह जिज्ञासा कि रोटी क्यों बनती है या चुंबक किस प्रकार विकर्षण करते हैं, अक्सर रविज्ञान की सीमा में बदल जाती है, जहां मानवता अज्ञात की सीमाओं के विरुद्ध आगे बढ़ती है। जिज्ञासा का बीज: विज्ञान मेला कई लोगों के लिए विज्ञान मेला वैज्ञानिक पद्धति से पहला संपर्क है। यह एक कम दांव वाला वातावरण है जो उच्च दांव वाले कौशल सिखाता है परिकल्पना परीक्षण: यह सीखना कि कोई विचार उतना ही अच्छा है जितना उसका समर्थन करने वाला डेटा। असफलता के माध्यम से तालीलापन: यह पता लगाना कि एक र असफल प्रयोग वास्तव में एक सफल डेटा बिंदु है।

संचार: जटिल अवलोकनों को एक ऐसी कथा में ढालना जिसे कोई न्यायाधीश या सहकर्मी समझ सके। इस स्तर पर, रसीमाएं व्यक्तित्व है। एक छात्र जरूरी नहीं कि दुनिया के लिए कुछ नया खोज रहा हो, लेकिन वह अपने लिए कुछ नया ढूंढ रहा है। यह मौलिक सिंगारी ही है जो प्रौद्योगिकी के निष्कर्ष उपभोक्ता को उसके भावी निर्माता से अलग करती है।

विज्ञान मेले से लेकर विज्ञान की सीमा तक का सफर सिर्फ भविष्य के वैज्ञानिकों को तैयार करने का नहीं है। यह एक ऐसे पीढ़ी का पालन-पोषण करने के बारे में है जो जिज्ञासु, नवीन और कल की चुनौतियों को हल करने में सक्षम हो - चाहे वह स्वास्थ्य देखभाल, पर्यावरण, प्रौद्योगिकी या

20वीं सदी के मध्य में हरित क्रांति ने कुछ उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की: इसने तेजी से बढ़ती वैश्विक जनसंख्या को पोषित किया। लेकिन ऐसा उन्होंने एक सौदे के माध्यम से किया, जिसकी पूरी लागत अभी स्पष्ट हो रही है। उच्च उपज वाली फसल किस्में, सिंथेटिक नाइट्रोजन उर्वरकों और रासायनिक कीटनाशकों ने उत्पादन में नाटकीय रूप से वृद्धि की — और समान रूप से किसान और भूमि के बीच संबंध को सरल बना दिया।

विश्व स्कूलों में मोबाइल फोन के साथ कैसा व्यवहार करता है

डॉ. विजय गर्ग

आज के डिजिटल युग में, मोबाइल फोन छात्रों के जीवन का एक अविभाज्य हिस्सा बन गया है। हालांकि, दुनिया भर के स्कूल अनुशासन, ध्यान और सुरक्षा की आवश्यकता के साथ प्रौद्योगिकी के लाभों को संतुलित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, विभिन्न देशों ने सख्त प्रतिबंधों से लेकर नियंत्रित उपयोग तक अनेक नीतियां अपनाई हैं।

वैश्विक प्रवृत्ति: बढ़ते प्रतिबंध
दुनिया भर में स्कूलों में मोबाइल फोन पर प्रतिबंधों में तेजी से वृद्धि हुई है। वैश्विक शिक्षा रिपोर्टों के अनुसार, लगभग 114 शिक्षा प्रणालियां (लगभग 58% देश) अब स्कूलों में किसी न किसी रूप में फोन प्रतिबंध लगा रही हैं। कुछ ही वर्षों में यह संख्या तेजी से बढ़ी है, जिससे पता चलता है कि सरकारें इनके बारे में अधिक चिंतित हो रही हैं।

कक्षाओं में ध्यान भटकाना
साइबर बुलिंग और ऑनलाइन जोखिम मानसिक स्वास्थ्य और स्क्रीन की लत दुनिया भर में विभिन्न दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाता है देश एक भी नियम का पालन नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे अपनी शिक्षा प्रणाली और संस्कृति के आधार पर विभिन्न मॉडलों का उपयोग करते हैं।

1। कुल प्रतिबंध (सख्त नीति)
स्कूल परिसर में फोन की बिल्कुल भी अनुमति नहीं है यदि वे मिल जाएं तो उन्हें जब्त किया जा सकता है।

उदाहरण:
फ्रांस (छोटे छात्रों के लिए) अमेरिका के कुछ हिस्से और एशिया

2। बेल-टू-बेल प्रतिबंध
स्कूल के समय फोन को बंद रहना चाहिए। केवल स्कूल से पहले या बाद में ही अनुमति है उदाहरण: संयुक्त राज्य अमेरिका के कई स्कूल इस दृष्टिकोण का पालन करते हैं कुछ जिलों में फोन को बैग या लॉक में रखना अनिवार्य है 3। आंशिक प्रतिबंध

ब्रेक या लंच के दौरान फोन की अनुमति है, लेकिन कक्षा में नहीं उपयोग की निगरानी शिक्षकों द्वारा की जाती है उदाहरण: कई यूरोपीय स्कूल आयु समूहों के आधार पर मिश्रित नीतियां

4। नियंत्रित शैक्षणिक उपयोग
फोन केवल सीखने के उद्देश्य से ही अनुमत हैं शिक्षक की अनुमति आवश्यक है सर्वेक्षणों से पता चलता है कि लगभग 54% स्कूल पर्यवेक्षण के तहत सीखने के लिए फोन की अनुमति देते हैं। देश-विशिष्ट उदाहरण

पोलैंड में ध्यान केंद्रित करने और विकर्षण को कम करने का उद्देश्य है 16 वर्ष से कम आयु के छात्रों पर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव इंटरनेट निर्भरता को कम करने पर ध्यान दें ग्रीस स्कूलों में फोन पर पहले से ही प्रतिबंध है बच्चों के डिजिटल उपयोग पर व्यापक प्रतिबंधों पर विचार करना संयुक्त राज्य अमेरिका नीतियां राज्य और स्कूल के अनुसार भिन्न होती हैं कई स्कूल सख्त इन-स्कूल प्रतिबंध लागू करते हैं, लेकिन आपातकालीन स्थितियों के लिए फोन की अनुमति देते हैं 20 से अधिक राज्यों में किसी न किसी प्रकार का प्रतिबंध है स्कूल फोन पर प्रतिबंध क्यों लगा रहे हैं

नकारात्मक प्रभाव
अनुसंधान और सर्वेक्षण कई चिंताओं को उजागर करते हैं 71% लोग फोन के इस्तेमाल से एकाग्रता में कमी की रिपोर्ट करते हैं साइबर बदमाशी और सामाजिक दबाव में वृद्धि छात्रों के बीच आमने-सामने की बातचीत कम प्रतिबंधों के लाभ बेहतर शैक्षणिक फोकस कक्षा अनुशासन में सुधार अधिक सामाजिक संपर्क और शारीरिक गतिविधि हानिकारक सामग्री के संपर्क में कम होना चल रही बहस बढ़ती प्रवृत्ति के बावजूद, यह मुद्दा विवादस्पद बना हुआ है। प्रतिबंध के

लिए तर्क छात्रों को पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है लत और विकर्षण को कम करता है मानसिक कल्याण में सुधार करता है

प्रतिबंधों के विरुद्ध तर्क
आपातकालीन स्थितियों के दौरान संचार को सीमित करता है शैक्षणिक ऐप्स के उपयोग को रोकता है कुछ छात्र स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं के लिए फोन पर निर्भर रहते हैं हाल की घटनाओं से यह प्रश्न भी उठ गया है कि आपातकालीन स्थितियों में जब फोन पर प्रतिबंध होता है तो छात्र किस प्रकार संचार करते हैं एक संतुलित दृष्टिकोण: भविष्य विशेषज्ञों का कहना है कि पूर्ण प्रतिबंध के बजाय स्कूलों को यह करना चाहिए डिजिटल जिम्मेदारी सिखाओ प्रौद्योगिकी के निर्देशित उपयोग की अनुमति दें डिजिटल साक्षरता शिक्षा के साथ नियमों को संयोजित करें निष्कर्ष दुनिया स्पष्ट रूप से स्कूलों में मोबाइल फोन के सख्त नियंत्रण की ओर बढ़ रही है, लेकिन यह एक समान समाधान नहीं है। हालांकि प्रतिबंध से ध्यान और अनुशासन में सुधार होता है, लेकिन प्रौद्योगिकी का जिम्मेदार और निर्देशित उपयोग भविष्य के लिए सबसे व्यावहारिक दृष्टिकोण हो सकता है।

अंततः, लक्ष्य मोबाइल फोन को समाप्त करना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि वे सीखने से ध्यान भटकाने के बजाय उसका समर्थन करें।

पहुंच से परे: क्यूआर-लिंकड पाठ्यपुस्तकें छात्रों को आकर्षित करने में क्यों संघर्ष करती हैं

डॉ. विजय गर्ग

डिजिटल नवाचार से प्रभावित कक्षाओं में, क्यूआर-लिंकड पाठ्यपुस्तकें पारंपरिक शिक्षा और डिजिटल दुनिया के बीच एक सेतु के रूप में उभरी हैं। मुद्रित पृष्ठों में त्वरित प्रतिक्रिया (क्यूआर) कोड को शामिल करके, शिक्षकों का उद्देश्य स्थिर पाठ्यपुस्तकों को इंटरैक्टिव शिक्षण उपकरणों में बदलना है। यद्यपि इस दृष्टिकोण से शैक्षणिक संसाधनों तक पहुंच में काफी वृद्धि हुई है, फिर भी इसे एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ रहा है: साथ ही छात्र सहभागिता को बनाए

रखना। मूलतः, क्यूआर-लिंकड पाठ्यपुस्तकें सुगमता को बढ़ाती हैं। स्मार्टफोन का उपयोग करके एक सरल स्कैन छात्रों को वीडियो, ऑडियो स्पष्टीकरण, प्रश्नोत्तरी और अतिरिक्त पठन सामग्री से जोड़ सकता है, जो मुद्रित पाठ से परे समझ को गहरा कर देता है। भारत में, दीक्षा जैसे प्लेटफॉर्म छात्रों को एनसीईआरटी पुस्तकों में क्यूआर कोड स्कैन करने और उनके पाठ्यक्रम के अनुरूप बहुभाषी डिजिटल सामग्री तक तुरंत पहुंच प्रदान करते हैं। यह एकीकरण विविध शिक्षण शैलियों का समर्थन करता है और उन छात्रों के लिए अंतरालों को पाटने में मदद करता है, जिनके पास निजी दृश्य या पूरक सामग्री तक पहुंच नहीं हो सकती है।

इसके लाभ तोस हैं। शोध से पता चलता है कि क्यूआर-सक्षम शिक्षण सामग्री पाठों को अधिक इंटरैक्टिव बनाकर समझ, प्रतिभाग्य और प्रेरणा में सुधार कर सकती है। कई राज्यों में, ऊर्जायुक्त पाठ्यपुस्तकों ने मल्टीमीडिया तत्वों को प्रस्तुत किया है। एनिमेशन, व्याख्यान और अभ्यास व्यायाम विज्ञान और गणित जैसे विषयों को जीवंत बनाते हैं। कई छात्रों के लिए, विशेष रूप से सक्कारी स्कूलों में, इससे जटिल विषयों को लेकर भय कम हो गया है और सीखने की

प्रक्रिया अधिक सुलभ हो गई है। इसके अलावा, क्यूआर-लिंकड पाठ्यपुस्तकें कक्षा से परे भी शिक्षा का विस्तार करती हैं। छात्र घर पर ही स्पष्टीकरण का पुनः अवलोकन कर सकते हैं, अतिरिक्त संसाधनों का पता लगा सकते हैं, तथा अपनी गति से सीख सकते हैं। यह लचीलापन विशेष रूप से बड़ी कक्षाओं में मूल्यवान है, जहां शिक्षकों का व्यक्तिगत ध्यान सीमित होता है।

हालांकि, बड़ी हुई पहुंच स्वतः ही सहभागिता में नहीं बदलती। प्राथमिक चुनौतियों में से एक डिजिटल बुनियादी ढांचे की असमान उपलब्धता है। सभी छात्रों के पास विश्वसनीय स्मार्टफोन, इंटरनेट कनेक्टिविटी या पर्याप्त डेटा नहीं होता है, विशेषकर ग्रामीण या आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में। इन आवश्यकताओं के बिना, क्यूआर कोड का उपयोग कम किया जाता है, तथा डिजिटल विभाजन को कम करने के बजाय बढ़ाया जाता है।

यहां तक कि जब पहुंच मौजूद हो, तो भी जुड़ाव की गारंटी नहीं है। केवल डिजिटल सामग्री से जुड़ने से यह सुनिश्चित नहीं होता कि छात्र सक्रिय रूप से उसकी खोज करेंगे या उसे समझेंगे। अध्ययनों से पता चलता है कि यद्यपि छात्र क्यूआर कोड की सुविधा को महत्व देते हैं, लेकिन लिंक की गई सामग्री की गुणवत्ता और प्रासंगिकता उनकी प्रभावशीलता निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खराब तरीके से डिजाइन किए गए या अत्यधिक सामान्य संसाधनों के कारण अरुचि पैदा हो सकती है, जिससे क्यूआर कोड एक परिवर्तनकारी उपकरण के बजाय सतही एड-ऑन बन जाते हैं।

शिक्षक की तैयारी एक अन्य प्रमुख कारक है। क्यूआर-लिंकड पाठ्यपुस्तकों का प्रभावी उपयोग करने के लिए शिक्षकों को पाठ योजनाओं में डिजिटल संसाधनों को सौच-समझकर एकीकृत करना होगा। उचित प्रशिक्षण के बिना, शिक्षक इन

उपकरणों को नजरअंदाज कर सकते हैं या छात्रों को उनका उत्पादक उपयोग करने में मार्गदर्शन नहीं दे सकते। परिणामस्वरूप, क्यूआर-आधारित शिक्षा की क्षमता का अभी भी उपयोग नहीं किया गया है। ध्यान भटकाने की भी चिंता है। क्यूआर कोड के माध्यम से प्राप्त डिजिटल सामग्री कभी-कभी छात्रों को संरचित शिक्षा से दूर, असंबंधित और प्रेरणाहीन स्थानों की ओर ले जा सकती है। डिजिटल रूप से उन्नत शिक्षा में निर्देशित अन्वेषण और केंद्रित अध्ययन के बीच संतुलन बनाए रखना एक सतत चुनौती है।

इन बाधाओं के बावजूद, क्यूआर-लिंकड पाठ्यपुस्तकों को अपना निर्मित शिक्षा की ओर एक व्यापक बदलाव को दर्शाता है। नीति निर्माता और शिक्षक तेजी से यह समझ रहे हैं कि शिक्षा का भविष्य पाठ्यपुस्तकों के स्थान पर नहीं, बल्कि उन्हें समृद्ध बनाने में है। डिजिटल बुनियादी ढांचे में सुधार, उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री तैयार करने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के प्रयास धीरे-धीरे वर्तमान सीमाओं का समाधान कर रहे हैं।

निष्कर्षतः, क्यूआर-संबंधित पाठ्यपुस्तकें ज्ञान तक पहुंच का विस्तार करके शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक आशाजनक कदम हैं। फिर भी, उनकी सफलता अंततः इस बात पर निर्भर करती है कि वे शिक्षाधीनता को कितनी प्रभावी ढंग से शामिल करती हैं। इस अंतर को पाटने के लिए प्रौद्योगिकी से कहीं अधिक का आवश्यकता है। इसके लिए विचारशील कार्यान्वयन, समावेशी पहुंच और शिक्षाओं के अनुभव पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

डॉ. विजय गर्ग रिटायर्ड प्रिंसिपल एजुकेशनल कॉलमिस्ट एमिनेंट एजुकेशनलिस्ट स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब - 152107

नारी शक्ति का उभार-महिला हेड कांस्टेबल रेवती को सैल्यूट! महिला आरक्षण कानून को लागू करने 16-18 अप्रैल 2026 को विशेष संसद सत्र-न्याय, साहस और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की ऐतिहासिक दिशा में भारत का निर्णायक क्षण

बदलते भारत में नारी शक्ति का बहुआयामी उदय- नारी शक्ति केवल भावनात्मक या प्रतीकात्मक नहीं है, बल्कि वास्तविक और प्रभावशाली अदम्य साहसिकता महिलाएं न केवल अन्याय के खिलाफ खड़ी हो रही हैं, बल्कि देश के भविष्य को भी दिशा दे रही हैं-नारी शक्ति अब केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत की वास्तविक शक्ति बन चुकी है -एडवोकेट किशन सनमुखादास भावनाती गाँविया महाराष्ट्र

निर्णायक माना जाए, तो वह थी महिला हेड कांस्टेबल रेवती उसकी हिम्मत और साहस को सैल्यूट! और इसके समानांतर संसद में महिला आरक्षण कानून को लागू करने के लिए 16 से 18 अप्रैल 2026 को बुलाया गया विशेष सत्र, इस परिवर्तन के दो सशक्त उदाहरण हैं एक ओर जहां एक महिला कांस्टेबल की बहादुरी ने न्याय व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया, वहीं दूसरी ओर देश की संसद महिलाओं को राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने के लिए निर्णायक कदम उठाने जा रही है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखादास भावनाती गाँविया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि यह संयोग मात्र नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन का संकेत है।

साथियों बात अगर हम सातानकुलम केस में महिला हेड कांस्टेबल रेवती के बहादुरी और साहस को समझने की करें तो, तमिलनाडु के थूचुकुडी जिले के सातानकुलम में वर्ष 2020 में हुई हिरासत में पिता-पुत्र की मौत ने पूरे देश को झकझोर दिया था। यह घटना केवल पुलिस अत्याचार का उदाहरण नहीं थी, बल्कि मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघन का प्रतीक बन गई थी। वहाँ तक चली कानूनी प्रक्रिया के

मामले में नौ पुलिसकर्मियों को दोषी ठहराते हुए उन्हें मृत्युदंड की सजा सुनाई इस ऐतिहासिक फैसले के पीछे यदि किसी एक व्यक्ति की भूमिका को सबसे निर्णायक माना जाए, तो वह थी महिला हेड कांस्टेबल रेवती। एक जूनियर अधिकारी होने के बावजूद उन्होंने अपने वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ गवाही देने का साहस दिखाया। यह निर्णय उनके लिए केवल पेशेवर जोखिम नहीं था, बल्कि उनके व्यक्तिगत जीवन, परिवार और सुरक्षा के लिए दे सकता है। उनकी बहादुरी ने न केवल जांच के लिए पहुंचे, तब रेवती ने जो शब्द कहे, वे आज भी न्यायिक इतिहास में गूँजे हैं, उन्होंने सच बताने की प्रतिबद्धता जताई, लेकिन साथ ही अपने बच्चों और नौकरी की सुरक्षा की चिंता भी व्यक्त की। यह क्षण केवल एक गवाह का बयान नहीं था, बल्कि एक माँ, एक महिला और एक जिम्मेदार नागरिक के बीच के संघर्ष का जीवंत उदाहरण था रेवती ने न केवल घटनाओं का विस्तार से विवरण दिया, बल्कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व देने की दिशा में ऐतिहासिक पहल

की जा रही है। केंद्र सरकार ने 16, 17 और 18 अप्रैल 2026 को संसद का विशेष सत्र बुलाया है, जिसका मुख्य उद्देश्य 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' को लागू करना है। यह अधिनियम, जो 2023 में संविधान के 106 वें संशोधन के रूप में पारित हुआ था, लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करता है। हालांकि यह कानून पारित हो चुका है, लेकिन इसके कार्यान्वयन के लिए परिसीमन और अन्य संवैधानिक प्रक्रियाएँ आवश्यक हैं, जिन पर इस विशेष सत्र में चर्चा की जाएगी।

साथियों बात अगर हम परिसीमन और सौटों का विस्तार: प्रतिनिधित्व का नया गणित इसको समझने की करें तो सरकार की योजना के अनुसार लोकसभा की कुल सीटों को 543 से बढ़ाकर 816 किया जा सकता है। इस प्रस्ताव के तहत लगभग 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। यह केवल संख्या में वृद्धि नहीं है, बल्कि यह प्रतिनिधित्व के स्वरूप को बदलने वाला कदम है। राज्यों के स्तर पर भी इसका व्यापक प्रभाव देखने को मिलेगा। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में लोकसभा सीटों की संख्या 80 से बढ़कर 120 हो सकती

है, जबकि महाराष्ट्र में यह संख्या 48 से बढ़कर 72 हो जाएगी। इन सीटों में एक-तिहाई महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी, जिससे महिला नेताओं की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। साथियों बात कर हम राजनीतिक सहमति और चुनौतियाँ इसको समझने की करें तो, इस महत्वपूर्ण विधेयक को पारित कराने के लिए सरकार को दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी। यही कारण है कि विभिन्न राजनीतिक दलों के साथ व्यापक संवाद किया जा रहा है। गृहमंत्री द्वारा कई प्रमुख दलों के नेताओं से मुलाकात इस बात का संकेत है कि सरकार इस मुद्दे पर व्यापक सहमति बनाना चाहती है। हालांकि विपक्ष ने इस सत्र की टाईमिंग और संशोधन पर सवाल उठाए हैं। उनका मानना है कि यह कदम राजनीतिक लाभ के लिए उठाया जा रहा है। लेकिन इसके बावजूद यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि महिला आरक्षण का मुद्दा दशकों से लंबित रहा है और अब इसे लागू करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। साथियों बात अगर हम महिलाओं के लिए आरक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि संघर्ष और वर्तमान उपलब्धि को समझने की करें तो महिला आरक्षण का विचार नया नहीं है। इसका प्रारंभिक स्वरूप 1931 में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सामने आया था। इसके बाद 1993 में पंचायतों और नगर निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू किया गया, जिसने ग्रामीण और स्थानीय स्तर पर महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाया। 1996 में पहली बार लोकसभा में महिला आरक्षण विधेयक पेश किया गया लेकिन यह लंबे समय तक राजनीतिक सहमति के अभाव में अटक रहा। अंततः 2023 में इसे संविधान संशोधन के रूप में पारित किया गया जो एक बहुत बड़ी सटीक ऐतिहासिक उपलब्धि है। साथियों बात अगर हम शक्ति और विकसित भारत के लक्ष्य को समझने की करें तो सरकार ने इस कानून को 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य से भी जोड़ा है। यह स्पष्ट है कि बिना महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के किसी भी राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और शासन, हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका निर्णायक होती जा रही है।

कालू पुर चुंगी से गुड़ मंडी तक सड़क समस्याओं का अंबार, सड़क सुरक्षा संगठन ने उठाई आवाज

परिवहन विशेष न्यूज सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत द्वारा कालू पुर चुंगी से गुड़ मंडी की तरफ जाने वाले खंभे पर रेडो टेप युक्त रिफ्लेक्टर लगाने, के साथ साथ सड़क के बीच में बने हुए सीवर जाम एवं बरसाती नालों की सफाई की समस्या सिटी पार्क के आस पास रहने वाले नागरिकों की तरफ से बताई गई कई स्थानों पर सड़कों के बीच में बने सीवर के मैम होल

का लेवल ठीक न होने के कारण सैकड़ों वाहन चालकों को हिचकोले खाते हुए एवं संतुलन बिगड़ने के कारण दुर्घटनाओं का भी सामना करना पड़ता है स्थानीय निवासियों ने कहा कि पिछले कई महीनों से सीवर जाम, नाले जाम, टूटे हुए डिवाइडर्स एवं ऊंचे नीचे सीवर के होल की समस्या के समाधान हेतु पहले भी कई बार अधिकारियों को सूचित किया गया लेकिन आज हम अपनी समस्या

को हल करने के लिए सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत एवं सोशल मीडिया के माध्यम से संबंधित विभागों से अनुरोध करते हैं कि इस प्रकार की स्थिति में सुधार हेतु प्रयास करें इस दौरान सड़क सुरक्षा संगठन के संयोजक संदीप बत्रा, मुकेश शर्मा, हरजीत, रमेश, गिरधारी, टिकू, पिंठू, बीना देवी, भोतू, प्रियांशु, आरुषि, बाला देवी इत्यादि मौजूद रहे।

उत्तराखंड में एनजीओ के चैरिटेबल स्कूल पर संगठित हमले का सनसनीखेज मामला, सीबीआई जांच की मांग तेज

परिवहन विशेष न्यूज अल्मोड़ा के दूरस्थ ग्राम डांडा-कांडा में पिछले दो दशकों से गरीब और अनाथ बच्चों को मुफ्त शिक्षा दे रही दि प्लेजेंट वैली फाउंडेशन अब एक बड़े आपराधिक षड्यंत्र का शिकार बन गई है। संस्था ने आरोप लगाया है कि नोएडा का कपड़ा व्यापारी और दोषसिद्ध अपराधी अपूर्वा जोशी उर्फ भैयाजी जोशी अपने गिरोह के साथ मिलकर स्कूल और उसकी संपत्ति पर कब्जा करने की साजिश रच रहा है।

इतना ही नहीं, आरोप है कि गिरोह डिजिटल और जमीनी स्तर पर भी दुष्प्रचार में जुटा है। फर्जी यूट्यूब वीडियो, भड़काऊ पोस्टर और "मारो-पीटो", "स्कूल पर बुलडोजर चलाओ" जैसे खुले हिंसक आह्वान से इलाके में तनाव फैलाया जा रहा है। यहां तक कि विदेशी मीडिया संस्था का फर्जी रूप धारण कर लोगों को गुमराह करने के आरोप भी

सामने आए हैं। गौरतलब है कि अपूर्वा जोशी को 2022 में एक अन्य मामले में दो साल की सजा सुनाई जा चुकी है, जिसे 2025 में भी बरकरार रखा गया। फाउंडेशन ने पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच के लिए CBI-SIT गठित करने की मांग की है। चेतावनी दी गई है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं हुई, तो मामला उच्चतम न्यायालय तक ले जाया जाएगा।

6 अप्रैल 2026 को थाना गोविंदपुर में दर्ज एफआईआर संख्या 17/2026 में अपूर्वा जोशी, उसकी पत्नी, भाई और अन्य सहयोगियों पर आईटी एक्ट और भारतीय न्याय संहिता की गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। इससे पहले भी 1 फरवरी 2026 को स्कूल की जमीन को अवैध रूप से बेचने की साजिश के आरोप में एक अन्य एफआईआर दर्ज हुई थी।

उद्देश्य चैरिटेबल संस्थान को पूरी तरह तबाह करना था।

मामले ने तब सनसनीखेज मोड़ लिया जब 17 फरवरी की रात कश्मिर तौर पर पेट्रोल छिड़ककर स्कूल में आग लगाने की कोशिश की गई। जांच में इसे सुनियोजित साजिश बताया गया है, जिसका

“ममता से मिशन तक: अविका अडूकिया का निःशुल्क शिक्षा अभियान बना मिसाल”

डॉ. शंभु पवार जब किसी व्यक्ति की सोच निस्वार्थ भाव से समाहित में समर्पित होती है, तो वह बदलाव की मजबूत नींव रखता है। इसी विचार को साकार कर रही हैं चिन्मया शहर के संभ्रांत अग्रवाल समाज की बहु अविका अडूकिया (पत्नी दिनेश अडूकिया), जो एक सामान्य गृहिणी होते हुए भी समाज में शिक्षा का अलख जगा रही हैं।

स्नातकोत्तर शिक्षित अविका अपने घरेलू दायित्वों के बीच समय निकालकर आर्थिक रूप से कमजोर और जरूरतमंद बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही हैं। वे उन बच्चों के लिए आशा की किरण बनी हैं, जो संसाधनों के अभाव में पढ़ाई या ट्यूशन का लाभ नहीं उठा पाते। उनकी सेवा यहीं तक सीमित नहीं है अविका बच्चों को अपनी ओर से पुस्तकें और आवश्यक अध्ययन सामग्री भी उपलब्ध कराती हैं, ताकि किसी भी बच्चे को शिक्षा आर्थिक कारणों से बाधित न हो। उनका यह प्रयास न केवल शिक्षा प्रदान कर रहा है, बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास और भविष्य को भी सशक्त बना रहा है। अविका द्वारा संचालित ये निःशुल्क ट्यूशन कक्षाएं समाज में एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी हैं। यह कक्षाएं बच्चों के लिए ज्ञान का स्रोत बनने के साथ-साथ उनके उज्वल भविष्य

को दिशा भी तय कर रही हैं। उनके समर्पण और सेवा भाव से अनेक बच्चों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

इस संदर्भ में अविका अडूकिया कहती हैं कि “मुझे यह प्रेरणा मेरे पारिवारिक संस्कारों से मिली है। मेरे माता-पिता ने हमेशा सेवा और शिक्षा का महत्व सिखाया है। मेरे पति दिनेश जी का निरंतर सहयोग और प्रोत्साहन ही मेरी सबसे बड़ी ताकत हैं। मैं चाहती हूँ कि कोई भी बच्चा केवल आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से

वंचित न रहे। यदि हम सब मिलकर थोड़ा-थोड़ा प्रयास करें, तो समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।” शहर में उनके इस सराहनीय और प्रेरणादायक प्रयास की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। समाज के लिए उनका यह योगदान न केवल शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन रहा है। अविका अडूकिया का यह प्रयास यह संदेश देता है कि यदि इरादे नेक हों, तो सीमित साधनों में भी समाज में बड़ा और सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

वंचित न रहे। यदि हम सब मिलकर थोड़ा-थोड़ा प्रयास करें, तो समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।” शहर में उनके इस सराहनीय और प्रेरणादायक प्रयास की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। समाज के लिए उनका यह योगदान न केवल शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह अन्य लोगों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन रहा है। अविका अडूकिया का यह प्रयास यह संदेश देता है कि यदि इरादे नेक हों, तो सीमित साधनों में भी समाज में बड़ा और सकारात्मक परिवर्तन संभव है।



“मैं वही नारी हूँ” मैं वही नारी हूँ— चूल्हे की आँच में तपकर निखरी, बर्तनों की खनक में खोई थी, पर मन में रोशनी ही बिखरी।

आज खड़ी हूँ उस शिखर पर, जहाँ पहुँचना कठिन कहा था, मैंने श्रम को शक्ति बनाया, और खुद को खुद ही गढ़ा था।

जब सबने सीमाएँ बाँधी, मैंने साहस से तोड़ी, अक्षर-अक्षर जोड़कर मैंने अपनी राहें खुद जोड़ीं।

आज खड़ी हूँ उस शिखर पर, जहाँ पहुँचना कठिन कहा था, मैंने श्रम को शक्ति बनाया, और खुद को खुद ही गढ़ा था।

जब सबने सीमाएँ बाँधी, मैंने साहस से तोड़ी, अक्षर-अक्षर जोड़कर मैंने अपनी राहें खुद जोड़ीं।

आज खड़ी हूँ उस शिखर पर, जहाँ पहुँचना कठिन कहा था, मैंने श्रम को शक्ति बनाया, और खुद को खुद ही गढ़ा था।



डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का सम्मान अमी भी अधूरा, उनके विचारों में बसता है सच्चा राष्ट्रवाद: राजेश खुराना

135वीं जयंती पर 'विश्व ज्ञान दिवस' मनाने की अपील, उनके चिंतन और राष्ट्रवादी विचारों में देश सबसे ऊपर हैं, - युवाओं से राष्ट्रवादी पुस्तकों को पढ़ने और समझने का आह्वान



उत्तर प्रदेश, संजय सागर सिंह। भारतीय संविधान के शिल्पकार, सामाजिक न्याय के प्रणेता और विश्व स्तर पर सम्मानित महान विचारक डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की 135वीं जयंती को 'विश्व ज्ञान दिवस' के रूप में मनाने की अपील के साथ समाज में उनके विचारों को व्यापक रूप से अपनाने की मांग उठी है।

वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने इस अवसर पर कहा कि बाबा साहेब को आज तक जितना सम्मान मिला है, वे उससे कहीं अधिक के हकदार हैं। उन्होंने कहा कि अम्बेडकर जी का योगदान केवल भारत तक सीमित नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने बताया कि आज बाबासाहेब की जयंती केवल भारत में ही नहीं, बल्कि न्यूयॉर्क, टोरंटो, लंदन, टोक्यो, हंगरी और दुबई सहित विश्व के अनेक अंतरराष्ट्रीय शहरों में भी श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई जाती है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 14 अप्रैल को 'विश्व ज्ञान दिवस' के रूप में मान्यता दिया जाना उनके बढ़ते वैश्विक प्रभाव का प्रमाण है।

राजेश खुराना ने कहा कि अम्बेडकर जी केवल एक संविधान निर्माता नहीं, बल्कि ज्ञान, संघर्ष और असाधारण विद्वता के प्रतीक थे। उनकी शिक्षा के प्रति लगन का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अल्प समय में उच्च शिक्षा के कई कीर्तिमान स्थापित किए और हजारों पुस्तकों का अध्ययन किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि विश्व के कई प्रतिष्ठित विद्वानों और नेताओं ने अम्बेडकर जी के ज्ञान और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण की सराहना की है।

उन्होंने कहा कि विश्वप्रसिद्ध लेखक जॉन ग्युंथर ने अपनी पुस्तक इनसाइड एशिया में लिखा डॉ. अम्बेडकर जी के विचारों से राष्ट्रवाद और देशभक्ति छलकती है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने उन्हें "ज्ञान का प्रतीक" कहते हुए कहा था कि "यदि अम्बेडकर जी के विचारों में देश में जन्म लेते तो हम उन्हें सूर्य कहते। नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने भी अम्बेडकर जी को अपना गुरु मानते हुए कहा था कि उनके योगदान का सम्मान अभी भी अधूरा है। प्रसिद्ध नेता पं. मदनमोहन मालवीय ने 1935 में कहा था अम्बेडकर जी के राष्ट्रवादी पांडित्य का मुकाबला संपूर्ण भारत के बुद्धिजीवी मिलकर भी नहीं कर सकते।

उन्होंने बताया कि अम्बेडकर जी ज्ञान, संघर्ष और असाधारण विद्वता का अनुपम संगम हैं। बाबासाहेब बुनिया के सबसे अधिक शिक्षित महान व्यक्तित्वों में गिने जाते हैं। वे अक्सर मजाक में कहते थे कि "मेरे पास डिग्रियों के दूक भरे पड़े हैं, यदि उनसे कुछ

हो सके तो मैं देश के लिए बहुत कुछ कर सकता हूँ।" डॉ. अम्बेडकर जी को जितना सम्मान मिला है, वे उससे कहीं अधिक के हकदार हैं।

र उनके विचारों ने भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना की नींव रखी, और इसके माध्यम से भारतीय मुद्रा प्रणाली को संगठित और सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। डॉ. आंबेडकर जी के योगदान को याद करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने कहा, भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विद्वान अर्थशास्त्री और मानवाधिकारों के जनक, भारतरत्न डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी को उनके योगदान के लिए विनम्र अभिवादन। डॉ. बाबा साहेब ने भारतीय आर्थिक संरचना को सशक्त बनाने के लिए जो मार्गदर्शन दिया, वह देश के आर्थिक केन्द्रीकरण, स्वतंत्रता

और प्रगति की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। श्री खुराना ने यह भी बताया कि डॉ. आंबेडकर जी के सुझावों और उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतीय रुपये की समस्या' - इसकी उत्पत्ति और समाधान के आधार पर 1926 में हिल्टन यंग कमिशन (रॉयल कमिशन ऑन इंडियन करेंसी एंड फायनेंस) द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक की अवधारणा तय की गई थी। लेकिन अफसोस की बात यह है कि डॉ. बाबा साहेब को भेदभाव के कारण वह सम्मान और मान्यता नहीं दी, जिसके वे पूरी तरह से पात्र थे। उनके योगदान को न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में बल्कि भारतीय समाज की सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता में भी अनदेखा किया गया।

राष्ट्रवादी विचारों से क्यों डर? पुस्तकों से जागती है देशभक्ति राजेश खुराना ने अपने संबोधन में राष्ट्रवादी विचारधारा और ऐतिहासिक साहित्य के महत्व पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अम्बेडकर जी की 'पाकिस्तान और पाटिशन ऑफ इंडिया' तथा 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' जैसी पुस्तकों को गंभीरता से पढ़ता है, उसके भीतर स्वतः ही राष्ट्र के प्रति समर्पण और देशभक्ति की भावना विकसित होती है। उन्होंने कहा कि इन पुस्तकों में न केवल भारत के विभाजन के ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण है, बल्कि उस दौर की सामाजिक और राजनीतिक सच्चाइयों का भी स्पष्ट चित्रण मिलता है। कुछ तत्वों द्वारा इन सच्चाइयों को महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करती हैं, बल्कि बंगाल, हैदराबाद और विभाजन के दौर में हुए दंगों की सच्चाई से भी आम लोगों को परिचित कराती हैं। उन्होंने बताया कि इन सच्चाइयों से असहज होने वाले कुछ तत्वों पूरे 100 साल तक समय-समय पर

और प्रगति की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। श्री खुराना ने यह भी बताया कि डॉ. आंबेडकर जी के सुझावों और उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतीय रुपये की समस्या' - इसकी उत्पत्ति और समाधान के आधार पर 1926 में हिल्टन यंग कमिशन (रॉयल कमिशन ऑन इंडियन करेंसी एंड फायनेंस) द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक की अवधारणा तय की गई थी। लेकिन अफसोस की बात यह है कि डॉ. बाबा साहेब को भेदभाव के कारण वह सम्मान और मान्यता नहीं दी, जिसके वे पूरी तरह से पात्र थे। उनके योगदान को न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में बल्कि भारतीय समाज की सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता में भी अनदेखा किया गया।

राष्ट्रवादी विचारों से क्यों डर? पुस्तकों से जागती है देशभक्ति राजेश खुराना ने अपने संबोधन में राष्ट्रवादी विचारधारा और ऐतिहासिक साहित्य के महत्व पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अम्बेडकर जी की 'पाकिस्तान और पाटिशन ऑफ इंडिया' तथा 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' जैसी पुस्तकों को गंभीरता से पढ़ता है, उसके भीतर स्वतः ही राष्ट्र के प्रति समर्पण और देशभक्ति की भावना विकसित होती है। उन्होंने कहा कि इन पुस्तकों में न केवल भारत के विभाजन के ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण है, बल्कि उस दौर की सामाजिक और राजनीतिक सच्चाइयों का भी स्पष्ट चित्रण मिलता है। कुछ तत्वों द्वारा इन सच्चाइयों को महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करती हैं, बल्कि बंगाल, हैदराबाद और विभाजन के दौर में हुए दंगों की सच्चाई से भी आम लोगों को परिचित कराती हैं। उन्होंने बताया कि इन सच्चाइयों से असहज होने वाले कुछ तत्वों पूरे 100 साल तक समय-समय पर

उन्होंने यह भी कहा कि पूर्व की सरकारों के कुछ नेता उनके राष्ट्रवादी विचारों और इन गंभीर विषयों पर खुलकर बोलने से बचते रहे, जिससे भ्रम और असमंजस की स्थिति बनी रही। यही कारण है कि आज भी कुछ समूह राष्ट्रवादी प्रतीकों, मूर्तियों चिन्हों और विचारों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे बाबा साहेब के द्वारा लिखी राष्ट्रवादी किताबों को स्वयं पढ़ें एवं समझें और बच्चों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें, ताकि ज्ञान और जागरूकता का प्रसार घर-घर में हो सके और ये महत्वपूर्ण सन्देश देश-विदेश और प्रदेश भर में बड़े स्तर जाये। उनके चिंतन और राष्ट्रवादी विचारों में देश सबसे ऊपर हैं, उनके राष्ट्रवादी विचारों को अपनाकर ही देश को प्रगति और विकास के पथ पर आगे बढ़ाया जा सकता है। युवाओं के लिए संदेश: पढ़ें, समझें और जागरूक बनें राजेश खुराना ने युवाओं और समाज के हर वर्गों को अपील करते हुए कहा कि वे अम्बेडकर जी के विचारों को स्वयं पढ़ें और अपने बच्चों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब का जीवन केवल एक प्रेरणा नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शन है, जिसमें राष्ट्र सर्वोपरि है। उनके विचारों को अपनाकर ही देश को प्रगति और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाया जा सकता है। अंत में उन्होंने कहा कि अम्बेडकर जी की जयंती केवल उत्सव का अवसर नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में उतारने का संकल्प लेने का दिन है। आज, उनकी 135वीं जयंती के अवसर पर हम डॉ. अम्बेडकर जी के योगदान को याद करते हुए उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को सम्मानित करते हैं, जो आज भी हमारे राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए प्रेरणा स्रोत है। उनका जीवन राष्ट्रवादी विचारों, समाज सुधार, मानवाधिकार और न्याय, समानता की लड़ाई का अद्वितीय उदाहरण है।

बेअदबी के दोषियों को मिसाल कायम करने वाली सजाएँ देने के लिए कानून के मसौदे को अंतिम रूप देने में सरकार जुटी: धालीवाल



अभी भी शिरोमणि कमेटी बेअदबी के दोषियों को सजा देने के लिए सरकार को सुझाव दे सकती है: धालीवाल

संत महापुरुष 13 अप्रैल को कानून बनाए जाने के साक्षी बनने के लिए विधानसभा की दर्शक दीर्घा में विराजमान हो:

धालीवाल ने दर्जनों गांवों में बैठकों के दौरान लोगों से सीधा संवाद किया और संबोधित किया

अमृतसर/अजनाला, 9 अप्रैल

(साहित्य बेरी)

आम आदमी पार्टी के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता, विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री पंजाब श्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने कहा कि बेअदबी के खिलाफ सख्त कानून बनाने के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान द्वारा 13 अप्रैल को खालसा पंथ के स्थापना दिवस बैसाखी के अवसर पर बुलाए गए पंजाब

विधानसभा के विशेष सत्र में बेअदबी के खिलाफ सख्त कानून बनाने तथा पहले से बने कानून में संशोधन करने हेतु प्रस्तावित मसौदे को उच्च कानूनी विशेषज्ञों की राय से अंतिम रूप दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि प्रस्तावित कानून में डिजिटल तकनीक का उपयोग कर बेअदबी करने वालों के लिए सख्त सजाएँ, जेल की काल कोठरियों में कठोर दंड, चल-अचल संपत्ति जब्त करने तथा भारी जुर्माने जैसी कानूनी प्रावधान शामिल किए जाने की संभावना है।

धालीवाल ने यह विचार आज अपने विधानसभा क्षेत्र अजनाला के गांवों—कामलपुरा, चिमियारी, हरद कलां, सुरेपुर-इब्राहिमपुरा, मोहन भंडारिया, मधु छांगा, कोट मुल, तलवंडी भंगवा, मतेनगल आदि—में “शानदार चार साल, भगवंत मान के साथ” अभियान के तहत आयोजित प्रभावशाली जन संवाद बैठकों में लोगों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब देते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि “जगत ज्योत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी कानून 2008” में संशोधन कर दोषियों को कड़ी सजा देने के लिए सुझाव प्राप्त करने हेतु मुख्यमंत्री मान ने संत समाज, टकसाली निहंग संगठनों, कार सेवा से जुड़े बाबाओं, संत-महापुरुषों, संप्रदायों, रागी जत्थों और कथावाचकों सहित विद्वानों से स्वयं संवाद किया है।

उन्होंने संत समाज को 13 अप्रैल को पंजाब विधानसभा के विशेष सत्र के दौरान दर्शक दीर्घा में उपस्थित होकर कानून निर्माण के साक्षी बनने का निमंत्रण भी दिया।

उन्होंने यह भी बताया कि सख्त कानून की मांग को लेकर समाना में समर्थकों के साथ अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे गुरुजीत सिंह खालसा से भी मुलाकात की गई तथा सुझाव प्राप्त किए गए। पंजाब विधानसभा के स्पीकर कुलतार सिंह संघवां ने भी इस संबंध में बैठक की।

डॉ. इंद्रवीर सिंह निज्जर की अध्यक्षता वाली सेलेक्ट कमेटी को श्रद्धालु संस्थाओं और विधायकों के माध्यम से कानून में

संशोधन के लिए अनेक सुझाव प्राप्त हुए हैं। इन सभी सुझावों पर विचार कर विशेषज्ञ कानून मसौदे को अंतिम रूप देने में लगे हुए हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा उठाए गए मुद्दे पर टिप्पणी करते हुए धालीवाल ने कहा कि सेलेक्ट कमेटी पिछले 8-9 महीनों से सक्रिय रूप से सुझाव ले रही थी और कोई भी संस्था या प्रतिनिधि स्वतंत्र रूप से अपने सुझाव दे सकता था। यदि शिरोमणि कमेटी के पास अभी भी सुझाव हैं तो उन्हें तुरंत सरकार तक पहुंचाया जाए ताकि समय रहते उन पर विचार किया जा सके।

इस अवसर पर खुशाल सिंह धालीवाल, एडवोकेट अमनदीप कौर धालीवाल, चेयरमैन बलदेव सिंह बबू चेतनपुरा, गुरजंत सिंह सोही, पीए मुख्तार सिंह बलडवाल, ब्लॉक प्रधान हरजीत सिंह, मनप्रीत सिंह, शेर सिंह, बलराज सिंह, राजवीर सिंह, इकबाल सिंह सहित बड़ी संख्या में पंच-सरपंच, राणामान्य व्यक्ति और वॉलंटियर्स मौजूद थे।

रत्नगर्भा कोल्हान में आदिवासी - मूलवासियों के साथ धोखा और कब तक ?



कोल्हान रक्षा संघ लाभांश एवं इलाके का विकास पर आन्दोलन करेगा खड़ा, शीपमफटी लूट बंद हो: रविंद्र मंडल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा: चाईबासा में आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में लौह अयस्क मैंगनीज उत्खनन, उससे लाभांश को लेकर कोल्हान क्षेत्र की दयनीय स्थिति और संसाधनों के दोहन पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। बैठक में वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि अब समय आ गया है जब कोल्हान की दशा को एक नई दिशा दी जाए। बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कोल्हान रक्षा संघ के अध्यक्ष डीबार जोंकों ने कहा यहां कितनी बड़ी विडंबना है कि टाटा स्टील जैसी कंपनियां जमशेदपुर को दुल्हन की तरह सजाने में लगी हैं पर सिक्के के दुसरे पहलु सारंडा और कोल्हान की कोख से जब वह लोहा बन कर निकलता है कर्पेट की तिजोरी भर जाती पर वहाँ के लोग आज भी प्यासे रह जाते हैं। हमारे पास न शुद्ध पीने का पानी है, न रहने को पक्का आवास

और न चलने को अच्छी सड़कें। आज भी यहाँ का युवा लकड़ी, दातुन और पत्ते बेचकर पेट भरने को मजबूर है। शिक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्थाएं कागजों तक सिमट कर रह गई हैं।

बैठक में जब आंकड़ों का अध्ययन हुआ तो आँखें फटी की फटी रह गयीं। कोल्हान क्षेत्र झारखंड के लौह अयस्क उत्पादन का 70-80% हिस्सा प्रदान करता है। मात्र एक महीने की बात करें तो यहां 18.72 लाख टन उत्पादन हुआ, जिसका बाजार मूल्य ₹585.89 करोड़ रहा है। कोल्हान से होने वाले वार्षिक उत्खनन का मूल्य लगभग 7,000 रु से 7,500 रु करोड़ बैठता है। राष्ट्रीय सुंदी समाज के प्रदेश अध्यक्ष रविन्द्र मंडल ने इन आंकड़ों पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा:

₹ अगर सालाना 7,500 करोड़ रुपये का खनिज हमारे पैरों के नीचे से निकाला जा रहा है, तो यहाँ की जनता दर-दर की ठोकरें क्यों खा रही है? रॉयल्टी और डिस्ट्रिब्यूट मिनरल फाउंडेशन का पैसा जा रहा कहां? इसके अलावे तांबे, युरेनियम, सोना आदि कोल्हान में रायल्टी करोड़ों देते हैं, पर जाता कहां।

कोल्हान की जनता अब मूकदर्शक बनी नहीं रहेगी। कोल्हान रक्षा संघ ने कहा हमें विकास में हिस्सेदारी चाहिए, केवल आशवासन नहीं। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि कोल्हान के अधिकारों की रक्षा के लिए एक बड़ा आंदोलन खड़ा किया जाएगा। खनिज उत्खनन में लगी कंपनियों में 75% स्थानीय युवाओं को अनिवार्य रोजगार देना पड़ेगा।

सारंडा के सुदूर गांवों तक पक्की सड़कें और शुद्ध पेयजल की तत्काल व्यवस्था प्रभावित क्षेत्रों में अत्याधुनिक अस्पताल और तकनीकी शिक्षण संस्थानों की स्थापना होनी चाहिए। जिसके लिये कोल्हान रक्षा संघ ग्रामीणों और मूलवासियों को मिलना चाहिए। जब तक सारंडा के अंतिम व्यक्ति तक विकास नहीं पहुँचता, खनिज संपदा के इन आंकड़ों का जनता के लिए कोई मोल नहीं है। इस मौके पर काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

कांग्रेस ने सिजीमाली में पुलिस के दमन की कड़ी निंदा की, PCC ने फैक्ट-फाइंडिंग कमेटी बनाई

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भूबनेश्वर: प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने सिजीमाली आंदोलन के संदर्भ में हुई हिंसा की कड़ी निंदा की है। PCC की ओर से एक प्रेस बयान में, राज्य मीडिया विभाग के अध्यक्ष अरविंद दास ने कहा, हम इस आंदोलन में पुलिस दमन की निंदा करते हैं। हिंसा से कोई भी आंदोलन सफल नहीं होता। विस्थापितों को न्याय दिलाने के लिए, हमें शांति और धैर्य से लड़ना होगा। इस प्रोजेक्ट से प्रभावित लोगों का हिात कांग्रेस का सबसे बड़ा लक्ष्य है। हालांकि, इसे हिंसक तरीकों से हासिल नहीं किया जा सकता। आंदोलन पूरी तरह से शांतिपूर्ण तरीके से जारी रहेगा। पुलिस को दमन का सहारा लेने का मौका नहीं मिलेगा। चाहे कितना भी समय लगे, कानून इस बात का उदाहरण है कि पांच साल के शांतिपूर्ण संघर्ष से कैसे न्याय पाया जा सकता है। 2005 में कांग्रेस के इस आंदोलन में आगे आने से पहले कुछ हिंसा हुई थी। पुलिस ने एक आदिवासी डगरिया को कैद भी किया था। लेकिन इसके बाद, मांग पूरी होने तक कोई और छोटी-मोटी गड़बड़ी नहीं हुई, लेकिन कांग्रेस ने आंदोलन में सफलता दिलाई। ओडिशा में जहां भी मिनरल रिसोर्स निकाले गए हैं या इंडस्ट्रियलाइजेशन किया गया है, वहाँ किसी भी सरकार या एडमिनिस्ट्रेशन ने विस्थापन की समस्या का आसान हल निकालने में कोई ईमानदारी नहीं दिखाई है। प्रभावित लोगों के प्रति सरकार और एडमिनिस्ट्रेशन की लगातार बेपरवाही के कारण विस्थापितों को न्याय नहीं मिल पा रहा है। चूंकि सरकार गैर-कानूनी मिनरल निकालने में शामिल है, इसलिए राज्य में किसी भी प्रोजेक्ट में कोई प्रोफेशनल कानून लागू नहीं हो रहा है। हर बार ऐसा लगता है कि प्रोजेक्ट से प्रभावित लोगों को ही नुकसान हुआ है और हर बार कांग्रेस पार्टी प्रभावितों के हितों के लिए लड़ने में सफल रही है। सिर्फ नीलगिरी में ही नहीं, बल्कि छेड़ीपाड़ा में भी कांग्रेस ने उन लोगों के आंदोलन को ताकत दी है जिनकी प्रैपटी माइनिंग से नष्ट हो रही है। हाल ही में, कांग्रेस पार्टी ने जगतसिंहपुर जिले के



एरसामा-बालीकुड़ा इलाके में आदिवासी किसानों के साथ JSW द्वारा किए जा रहे अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। कांग्रेस ने सिजीमाली में हाल ही में हुई हिंसा की कड़ी निंदा की है और PCC प्रेसिडेंट भक्तचरण दास के निर्देश पर PCC ने इस घटना की जांच के लिए सीनियर नेताओं का एक डेलीगेशन बनाया है। कोयल्टा के MP और AICC के नॉर्थ-ईस्ट राज्यों के ईंचांज सप्टगिरी उलका की अगुवाई वाली इस कमेटी के को-चेयरमैन पूर्व मंत्री सुरेश राउतारय हैं। टीम में सीनियर MLA तारा प्रसाद बहिनीपति, गुनापुरा MLA सत्यजीत गामंग, लक्ष्मीपुरा MLA पिडुत सावंता, चिक्कोडा MLA मंगूखिल, PCC ट्राइबल डिपार्टमेंट के

चेयरमैन और पूर्व MP यशवंत सिंह लागुरी, पूर्व MLA भुजबल माझी, स्टेट महिला कांग्रेस प्रेसिडेंट मोनाक्षी बहिनीपति, सीनियर कांग्रेस लीडर रत्नमणि उलका और अमिता बिस्वाल शामिल हैं। टीम शुक्रवार, 10 तारीख को घटना की जगह पर पहुंचेगी। कांग्रेस MLA रामचंद्र कदम भी इस टीम के साथ घटना की जगह पर जाने वाले हैं। इसके साथ ही, अविभाजित कोरापुट जिले के सभी DCC प्रेसिडेंट, कालाहांडी DCC प्रेसिडेंट, सभी संबंधित ब्लॉक के कांग्रेस प्रेसिडेंट, पार्टी के सीनियर लीडर और DCC चर्करा मौके पर पहुंच गए हैं और इस मुश्किल समय में प्रभावित लोगों के साथ हैं, ऐसा श्री दास ने उनसे कहा है।

बेटी के जन्मदिन पर सेवा का उत्सव (बड़वा के राजकीय कन्या उच्च विद्यालय में रक्तदान से सजी संवेदनाओं की सरगम)

भिवानी/हिसार (डॉ. सत्यवान सौरभ), 9

अप्रैल।

जहाँ अक्सर बेटियों के जन्म पर समाज में चुप्पी पसरी रहती है, वहीं गांव बड़वा में एक परिवार ने इस सोच को नई दिशा दी। आरवी पुत्री पवन लखेरा के जन्म को केवल उत्सव नहीं, बल्कि सेवा का पर्व बनाते हुए रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया—और इस पहल ने संवेदनाओं को एक नई आवाज दे दी। राजकीय कन्या उच्च विद्यालय परिसर उस दिन केवल एक स्थान नहीं, बल्कि मानवता की धड़कनों से भरपूर मंच बन गया। नेशनल सोशल ऑर्गेनाइजेशन भिवानी शाखा और शिवालिक युवा मंडल के संयुक्त प्रयासों से आयोजित इस शिविर में 36 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। हर रक्तदाता मानो अपने भीतर से एक बूंद जीवन निकालकर किसी अनेदखे जीवन की लौ जलाने चला आया हो। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने इस पहल को समाज के लिए प्रेरणास्रोत बताया। उनके शब्दों में यह आयोजन केवल रक्तदान तक सीमित नहीं था, बल्कि यह बेटी के सम्मान, समानता और सामाजिक जागरूकता का संदेश भी था। रक्तदाताओं को सम्मानित करते हुए



उन्हें प्रमाण पत्र और पौधे भेंट किए गए—जैसे सेवा के साथ प्रकृति का आशीर्वाद भी जुड़ गया हो।

इस अवसर पर बड़वा के सुप्रसिद्ध समाजसेवी महेंद्र लखेरा की भावनाएं विशेष रूप से मुखर रहीं। उन्होंने कहा कि उनके घर पोती के जन्म की खुशी में आयोजित रक्तदान शिविर एवं जलवा पूजन कार्यक्रम सभी के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उन्होंने नेशनल

सोशल ऑर्गेनाइजेशन भिवानी, शिवालिक युवा मंडल की युवा टीम, आदरणीय विधायक राणधीर सिंह जी, नगरपालिका चेयरमैन श्री राजेश केडिया जी, श्री अशोक लखेरा सरपंच चौधरीवास, विद्यालय स्टाफ, समस्त ग्रामवासियों तथा गुलशन पोपली जी और श्री राजजीत जी का हृदय से आभार व्यक्त किया। यह आयोजन केवल एक समाचार नहीं, बल्कि एक संदेश है—कि जब खुशियाँ दूसरों

के जीवन से जुड़ती हैं, तब वे उत्सव से आगे बढ़कर प्रेरणा बन जाती हैं। बेटी के जन्म पर रक्तदान की यह पहल समाज के उस बदलते चेहरे की झलक है, जहाँ अब बेटियाँ केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि गर्व और संवेदना का प्रतीक बन रही हैं। (डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक हैं।)

सरायकेला का विश्व प्रसिद्ध छऊ अखाड़ा माडा राजमहल में आयोजित

1938 से 2000 तक युरोप, अमेरिका में लोकप्रिय इस छऊ के आज भी लाखों अनुयायी विदेशी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, सरायकेला राजमहल में विश्व प्रसिद्ध सरायकेला छऊ का रआखडा माडा राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव तथा रानी अरुणिमा सिंहदेव के उपस्थित में आज शाम विधिवत पूजा अर्चना से आरंभ हुई। अखाड़ा साल में भैरव पूजन के बाद छऊ का प्रथम आगाज आज शाम इस ऐतिहासिक महल में फरिखंडा नृत्य के साथ सांकेतिक आयोजन हुआ साथ ही नये कलाकरों ने रियाज आरंभ की। जहां पंडित सवधरी कलाकर ने अखाड़ा के विधिवत पूजा अर्चना कर डाल तालवार की भी पूजा की। इसके साथ देश विदेश में रह रहे छऊ के प्रेमी भी इस राजमहल उत्सव को लेकर जानकारी लेते रहे हैं। जहां कभी दर्जनों विदेशी पर्यटक आते रहे।

यहां अखाड़े की बात की जायतो नृत्य अखाड़ा वर्नाकार 25x25 फीट का बनता है, जिसे तैयार करने हेतु मिट्टी या गोबर से कई



बार तब तक लीपा जाता जबतक उसके ऊपर मोटी परत न पड़ जाय। इसके ऊपर छल एक बढ़िया सामियाना डाला जाता। कमसे कम दो द्वार बनाए जाते जो चार चार वस्ती के नृत्य अखाड़े हेतु राजमहल में कभी प्रयुक्त होते थे। जब वह उक्तलीय वीरों के युद्ध पाइक अखाड़े होते थे तब वहां चार द्वार होते थे जिसका सांकेतिक उद्देश्य जीवन के चार उद्देश्य से जुड़ा माना जाता। जो जगनाथ पुरी मंदिर के चार द्वार के अनुसार होते।

यहां निकट दो नगाड़े रखने की व्यवस्था की जाती ताकि आली नृत्य रात को इन नगाड़ों के वाद्य से तीन बार सतर्क

करने के बाद यात्रा घट बजा कर नृत्य आरंभ किया जा सके। साथ ही वाद्ययंत्र व उसके विशारदों के लिए होते।

आज अखाड़ा माडा में राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव, रानी साहिबा श्रीमती अरुणिमा सिंहदेव, संरक्षक नीलावर सिंहदेव, गुरु तरुण भोल, आयोजक भीष्म वैवत, गुरु श्यामा चरण पाणी, शोधकर्ता रजतेन्दु रथ, निवारण महतो, काली प्रसन्न झाड़ी, गणेश परिच्छा, ज्योति लाल नंदा, शुक्ला मोहान्नी, कुसुम पट्टनायक, उषा मिश्रा तथा छऊ मर्मज्ञ सह प्रचारक कार्तिक कुमार परिच्छा रहे।

होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड: स्टूडेंट्स के ओवरऑल इवैल्यूएशन में मददगार

इस बार परेंट-टीचर मीटिंग खास अट्रैक्शन रही जिसमें स्टूडेंट्स को अपने रिजल्ट्स मिलने का खास एक्सपीरियंस हुआ। स्टूडेंट के सीखने के प्रोसेस में सिर्फ किताबी ज्ञान का ही इवैल्यूएशन नहीं होता। एजुकेशन के मौजूदा दौर में, नई एजुकेशन पॉलिसी 2020 के तहत स्टूडेंट के ओवरऑल डेवलपमेंट का इवैल्यूएशन किया जाता है। जिसमें स्टूडेंट की एकेडमिक, सोशल और इमोशनल रुचियों, घर के आस-पास के माहौल, परेंट्स की भागीदारी और स्कूल के बाद स्टूडेंट द्वारा की जाने वाली घरेलू एक्टिविटीज और उसके इमोशनल एक्सप्रेसन को एजुकेशनल इवैल्यूएशन के जरिए समझा जाता है। इस बार सालाना रिजल्ट्स में होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड आकर्षण का केंद्र रहा। रिजल्ट्स लेने आए स्टूडेंट्स के लिए रंग-बिरंगे काइर्स अट्रैक्शन पैदा कर रहे थे। जिसमें स्टूडेंट्स को अपनी पूरी जानकारी मिली, एकेडमिक एजाम्स के साथ-साथ बेसलाइन और एंड लाइन के रिजल्ट्स भी कॉम्प्रेहेंसिव इवैल्यूएशन प्रोग्रेस के जरिए लिखकर मिले। आइए होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड के बारे में जानकारी लेते हैं जो स्टूडेंट और एजुकेशन के फील्ड में एक नई पहल है।

होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड:

भारत की नई एजुकेशन पॉलिसी 2020 के तहत एक 360-डिग्री असेसमेंट टूल है। यह एकेडमिक, कॉग्निटिव, सोशियो-इमोशनल और साइकोलॉजिकल पहलुओं में स्टूडेंट के डेवलपमेंट का असेसमेंट करता है। ट्रेडिशनल रिपोर्ट कार्ड के उलट, यह सिर्फ रटने के बजाय कॉम्प्यूटरी को ट्रैक करने के लिए टीचर, स्टूडेंट, परेंट्स और सेल्फ-असेसमेंट से मिले इनपुट का इस्तेमाल करता है।

